चोरड़िया
व
सहगोत्र का
इतिहास तथा
स्रोत के शिलालेख

महाजन वंश मुक्तावली के अनुसार :

पूरब देश नगर चन्देरी में खरहथसिंह राठोड़ नामक राजा राज्य करता था, जिसके ४ पुत्र थे।

१) अम्बदेव २) निम्बदेव ३) भैंसा ४) आसपाल

सम्वत् ११९२ में श्री. जिनदत्त सूरी खरतर गच्छाचार्य युग प्रधान चन्देरी परगने में पधारे। उस समय राठ लोगों की फौज में साथ लिये हुए यवनों ने काबली देश को लूटना आरम्भ किया। अगणित द्रव्य लेकर जाने लगे तो राजा खरहथ को ये समाचार मिला। तब दुष्टों को दण्ड देने के लिए राजा अपने चारों पुत्र और सेना के साथ युद्ध करने चला। राजा के सुभटों ने युद्ध में सारा धन छीन लिया, किन्तु युद्ध में राजा के पुत्र आहत हो गये। राजा उन्हें पालखी में डालकर पीछे फिरा। चारों पुत्रों के बारे में सारे वैद्यों ने जवाब दे दिया कि वे अब किसी भी तरह नहीं बच सकते। यह सुनते ही राजा मूर्च्छित हो गया। राजा के पुत्र अचेत पड़े थे। तब लोगों ने ठंडी हवा एवं पानी से उन्हें सचेत कर दिया। राजा विलाप करने लगा।

उसी क्षण आचार्य जिनदत्त सुरी विहार करते चले आए। लोगों ने राजा से बिनती की, कि ''हे पृथ्वीपति! शान्त-दान्त जितेन्द्रीय अनेक देवी-देवताएँ हैं। उनमें जिन के ५२ और ६४ योगिनियों को वश करता, ५ पीरों का वश करने वाला, बिजली को पात्र के नीचे थामनेवाले, जंगम सुर तरू आपके भाग्योदय से यहाँ पधार रहें हैं। यह सुनते ही राजा उनके चरणों में गिर पड़ा और रोने लगा। गुरु ने कहा, ''राजन् क्या दुःख है?'' तब जो चारों पुत्र मृतवत् पालखी में पड़े थे, सिपाहियों ने उन्हें जिनदत्त सुरी के सम्मुख उपस्थित किया। गुरु ने कहा ''जो तुम जैन धर्मी बनो, मेरी आज्ञा मानो तो चारों पुत्र अभी अक्षत् अंग हो जाएँगे।''

राजा ने कहा ''हे परम गुरुजी! जो मेरी सन्तान और मैं आपसे और आपकी सन्तानों से विमुख हो जाएँ तो कभी सुख नहीं पाएँगे। आपकी आज्ञा खरहथ की सन्तानों को मान्य है। इस तरह की प्रतिज्ञा जब राजा कर चुके, तब गुरु ने देवताओं का आह्वान किया। देवताओं ने गुरु के आदेश से अमृत का छिड़काव किया और तत्काल ही चारों पुत्र अक्षत् अंग हो उठ खड़े हुए। उन्होंने गुरुचरणों की पूजा की। आश्चर्ययुक्त हो सभी राजपूतों ने जैन धर्म का अंगिकार किया। उन्होंने न्यारे-न्यारे गोत्र स्थापित किये। उन्हीं के नाम समुच्चय लिखे गये। राजा खरहथ के ज्येष्ठ सुपुत्र अम्बदेव ने चोरों को पकड़ा। बेड़ियाँ डाली, सो चोरबेड़िये अथवा चोरों से जा कर भिड़े इसी कारण से चोर-भिड़िये कहलाये। लोग चोरड़िया कहा करते हैं, चोरबेड़िये से कई शाखाएँ निकलीं। तेजाणी, धन्नाणी, पोपाणी, मोलाणी, गल्लाणी, देवसयाणी, नाणी, श्रवणी, सद्दाणी, कक्कड़, मक्कड़, भक्कड़, लुटक्कड़, संसारा, काबेरा, भट्टारकिया, पीतलिया, सोनी, फलोदिया, रामपुरिया, सीपाणी आदि। दुसरे पुत्र निम्बदेव की सन्तान वाले भटनेरा में चोधराहट करने से भटनेरा चौधरी कहलाये। तीसरे भैंसाशाह की ५ पत्नियाँ थीं। इन्होंने अपनी आवासी व्यवस्था मालवदेश के माँडवगढ़ में की थी। इन्हीं ५ स्त्रियों के ५ पुत्र हुए। ज्येष्ठ पुत्र कुँवरजी की सन्तान सावण सुखा कहलाई। कुँवरजी ने ज्योतिष, निमित्त, शकुनशास्त्र आदि विषयों का अध्ययन किया था। जो बात कहते, वह प्रायः सिद्ध हो ही जाती! मांडवगढ़ से चित्तौड़ के राणाजी ने बुलावा भेजा। परीक्षा करने को पूछा, तब कुँवरजी बोले ''सावण सूखा और भादवा हरा-भरा होगा।'' अन्त में कुँवरजी ने जैसा कहा, वैसा ही हुआ, तब राणाजी ने कहा ''सच तुम्हारा कहणा। सावण सूखा गया'' तब से लोग सावण सूखा कहने लगे। कुँवरजी के वंश में गुलराजजी हुए, जो गुड़ के गुलगुले बनाकर लड़कों को खिलाते। इसके आधार पर लड़कों ने उनका नाम गुलगुला सेठ रखा। कुँवरजी के वंश वाले जैसलमेर में गूगल का व्यापार करते थे, इसलिये लोग उन्हें गुगलिया कहने लगे। कुँवरजी के दुसरे पुत्र गेलो जी। इनके पुत्र बच्छाजी की सन्तान को गेल-बच्छा कहते-कहते वे गोलछा या गुलेछा कहलाने लगे। कुँवरजी के तीसरे पुत्र बुच्चा शाह की सन्तान बुच्चा कहलाये। कुँवरजी के चौथे पुत्र पासूजी आहड़ नगर के राजा चन्द्रसेन ने अपनी सरकारी जवाहिरात खरीदने के लिए जौहरी कायम किये।

एक दिन एक परदेसी श्रीमाल जौहरी राजा के पास हीरा बेचने लाया और राजा को दिखाया। जौहरियों ने भी इस हीरे की प्रशंसा की। जिसके बाद राजा ने अपने जौहरी पासूजी को हीरा दिखलाया। पासूजी बोले यह हीरा तो अनमोल है, पर इसमें एक खोट है। तब राजा ने पूछा, ''वह कौन-सी?'' पासू जी ने कहा ''जिसके घर यह हीरा रहता है, उसकी स्त्री मर जाती है। तब राजा ने श्रीमाल जौहरी को बुलाकर पूछा।'' श्रीमाल ने बताया- ''मैंने २ विवाह किये, मेरी दोनों पत्नियाँ मर गईं, तब हीरे में ही खोट है यह समझकर बेचने निकला। फिर तीसरा विवाह करूँगा।'' तब राजा ने पासूजी को 'पारख' का पदनाम दिया। प्रतिवर्ष १ लाख रुपये देने की व्यवस्था भी की। हीरा खरीदकर ऋषभदेव भगवान के माथे पर लगा दिया। पासूजी की सन्तान पारख कहलाई।

कुँवरजी के पाँचवा पुत्र सेनहत्थ था। (गादाशाह उनका उपनाम था।) इसकी सन्तान गादिया या गद्दैया कहलाई। खरहत्थ के चौथे पुत्र आसपाल की सन्तान आसाणी तथा ओस्तवाल की सन्तान ओस्तवाल के नाम से प्रसिद्ध हुई। श्री. सोहनराज भन्साली के अनुसार सम्वत् ११९२ में आचार्य श्री. जिनदत्तसूरी ने चोरड़िया ग्राम के जिन क्षत्रियों को प्रतिबोधित किया वे सभी चोरड़िया ग्राम के नाम से चोरड़िया कहलाये। चोरड़िया ग्राम आज भी जोधपुर-जैसलमेर राज्य मार्ग पर स्थित है। उपकेशगच्छ पट्टावली के अनुसार वीर सम्वत् ७० (अर्थात् भगवान् महावीर के निर्वाण के ७० वर्ष पश्चात् भगवान् पार्श्वनाथ के छठे पटधर आचार्य श्री.रत्नप्रभ सूरी ने उपकेशपुर पाट्टन (वर्तमान ओसियाँ) में श्रावण शुक्ला चतुर्दशी को प्रवचन दिया। तब उस दिन १८ लोगों ने श्रावक धर्म का अंगिकार किया। इनके नाम या गोत्र आदि के अनुसार, १८ गोत्रों की स्थापना निम्नानुसार हुई।

तातेड	**बाफणा**	**करणावट**
बलाह	**मोरख**	**कुलहट**
विरहट	**श्रीश्रीमाल**	**श्रेष्ठी**
संचेती	**आदित्यनाग**	**भूरी**
भद्र	**चिंचट**	**कुम्भट**
डिडू	**कन्नोजिया**	**लघुश्रेष्ठी**

ओसवाल जाति के सभी इतिहासकारों ने इन १८ गोत्रों की स्थापना को एक मत से स्वीकारा है। वे यह भी स्वीकारते हैं कि आदित्यनाग गोत्र की सहगोत्रों और उपगोत्रों की सबसे अधिक संख्या है और आदित्यनाग गोत्र की चोरड़िया, पारख, गादिया, गुलेच्छा, भटनेरा चौधरी, श्रावण सूखा, बुच्चा और अनेक इनकी उपगोत्रें हैं। मुनि चन्द्रशेखर की पुस्तक 'सीपी' के अनुसार आदित्यनाग गोत्री चोरड़िया, शाखा के भैंसाशाह ने वि.सं. २०९ अर्थात् सन् २६४-६५ में शत्रुन्जय का संघ निकाला था। मुनि श्री. रत्न विजयजी महाराज की शोध-खोज पुस्तक के अनुसार ओसियाँ के एक भग्न मन्दिर के शिला-खण्डों में चन्द्रप्रभुजी की एक खण्डित प्रतिमा के नीचे ''वि.सं. ६०२ आदित्यनाग गौत्र चोरड़िया'' अंकित है। इससे स्पष्ट होता है, कि वि.सं. ६०२ के पूर्व चोरड़िया गोत्र बहुत समृद्ध था। वि.सं. ५०८ का एक शिलालेख कोटा राज्य के अटारू ग्राम के एक जैन मन्दिर में मिला है। जिसके समालोचक पुरातत्वज्ञ मुन्शी देवीप्रसाद हैं। ''राजपुताना की शोध खोज'' में एक शिलालेख में भैंसाशाह का नाम अंकित है। भैंसाशाह ने मेवाड़ में भैंसरोड़ा नगर बसाया था। उपरोक्त उपकेशगच्छ पट्टावली और खरतर गच्छ के मतानुसार चोरड़िया व सह गोत्रों की स्थापना में १५९२ वर्षों का अन्तर है। अन्त में दोनों विचारधाराओं में सत्य क्या है? यह विचारणीय है।

खरतर गच्छ के यती श्री. रामलालजी महाराज ने महाजन वंश मुक्तावली में यह स्वीकार किया है कि वि.सं.११९२ में बछराज राठोड़ को प्रतिबोधित कर गोलछा गोत्र की स्थापना की। चन्द्रशेखरजी महाराज द्वारा लिखित सीपी पुस्तक के अनुसार श्री. रत्नप्रभ सूरी जी ने ई.पू. ४८६ में पूज्य श्री. स्वयंप्रभ सूरी जी से दीक्षा ली थी। ई.पू. ४५७ में श्री. रत्नप्रभ सूरी जी ने ओसियाँ और कोरटा में चैत्य प्रतिष्ठा की थी और ई.पू. ४४३ में उनका निर्वाण हुआ। उपरोक्त वर्णन के अनुसार चोरड़िया वंश के पूर्वजों ने ई.पू. ४८६ एवं ई.पू. ४५७ के मध्य जैन धर्म का स्वीकार किया, ऐसा अनुमानित है ।

निष्कर्ष

खरतर गच्छ पट्टावली व अन्य इतिहासकारों के अनुसार चोरड़िया, उसकी गोत्रों एवं उपगोत्रों की उत्पत्ति १२ वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में हुई और आदिपुरुष राठोड़ राजपुत्र थे। यदि इसे माने तो चोरड़िया और इसकी सह और उपगोत्रों की कुलदेवी नागणेशिया माता होनी चाहिये, जो कि नहीं है तथा जो शिलालेख व अन्य प्रमाणों को माने तो आज से २४५८ वर्ष पूर्व वीर सम्वत् ७० की श्रवण कृष्णा १४ को आदित्यनाग गोत्र की स्थापना हुई। अत: कुलदेवी जगत् भवानी सच्चियाय माता (ओसियाँ) है। भानपुरा मध्यप्रदेश निवासी श्री. विमलकुमार चोरड़िया ने भी उपरोक्त कथन को स्वीकारा है। खरतर गच्छ के यती श्री. रामलालजी ने यह भी स्वीकारा है कि खरतर गच्छ के आचार्य बीकानेर आए तो वहाँ की जनता ने उनका उचित सम्मान सत्कार नहीं किया। इससे रुष्ट होकर बीकानेर के मन्त्रीवर श्री. कर्मचन्दजी बच्छावत ने क्रोधित होकर ओसवाल इतिहास की जितनी भी पुस्तकें थीं, उन सबको एकत्रित कर कुएँ में डलवा दिया। इसके पश्चात् पुनः ओसवालों के गोत्र का इतिहास लेखन किया। सत्य क्या है, यह अन्वेषण का प्रश्न है।

चोरड़िया गोत्र की सह गोत्रें

पारख, गादिया, गुलेच्छा, श्रावणसुखा, भटनेरा चौधरी बुच्चा

चोरड़िया से निकली हुई उप गोत्रें

सोढ़ाणी	संघवी	उड़क
मसाणिया	मिणियार	कोठारी
नाबरिया	सराफ	कामाणी
दुद्धोणी	सीपाणी	आसाणी
सहलोत	लघु सोढ़ाणी	देदाणी
रामपुरिया	नागोरी	पाटणिया
छाडोत	ममइया	बोहरा
खजान्ची	सोनी	हाड़ेरा
दफ्तरी	चौधरी	तोलावत
राव	जोहरी	गल्लाणी
पीथलिया		

पारख से

भावसरा	संघवी	ढ़ेलड़िया
जसाणी	मल्हाणी	नन्डक
तेजाणी	रूपावत	चौधरी
लघु-पारख		

गुलेछा, गोलेछा या गोलछा से

दौलतपाणी	सांगाणी	संघवी
नापाड़ा	काजाणी	हुल्ला
मेहजावत	नागड़ा	चित्तोड़ा
चौधरी	दातारा	मिनागरा

श्रावण सुखा, सावन सुखा या साम सुखा से

मीनारा	लोला	बीजाणी
केसरियावाला	कोठारी	नान्देचा

भटनेरा चौधरी से

कूम्पावत	भण्डारी	जीमणिया
चेदावत	साँभरिया	कानूगा

गद्दैया, गद्यैया, गादिया से

गेहलोत	लूणावत	रणशोभा
बलोत	संघवी	नोपता

बुच्चा से

सोनारा	भंडालिया	करमोत
दालिया	रत्नपुरा	

आदित्यनाग चोरड़िया की सहगोत्रें, उनकी उपगोत्रों की कुल संख्या १०० से अधिक हो सकती है। ये गोत्रें उनके पूर्व प्रतिभावान् व्यक्ति के नाम से बनी, कुछ गोत्रें पूर्व निवास के नाम से पुकारी जाने लगीं, कुछ उनके व्यवसाय या उनकी विशेषता के कारण बनीं। कुछ गोत्रों का निर्माण उनके पद से हुआ। सम्पूर्ण ओसवाल जाति में चोरड़िया गोत्र ही विशालतम गोत्र है।

गोत्र

चोरड़िया, गोलेच्छा,
पारख, सावणसुखा, गद्दहिया

गोत्र : चोरड़िया (स्रोत : '' जैन लेख संग्रह '' लेखक : पूर्णचन्द्रजी नाहर)

क्रम	शिलालेख क्रम	वर्ष	गच्छ	प्रतिष्ठापक आचार्य	स्थान	निर्माता श्रावक
१.	१८२	१९३५	खरतर	नन्दीवर्धन	पावापुरी	नानकचन्द
२.	३०१	१७८६	-	-	पटना	जीवण
३.	४३९	१८७७	खरतर	जिनहर्ष	मिर्जापुर	मन्नुलाल
४.	४४९	१६०५	-	जिनचन्द्र	सम्मेतशिखर	नाता
५.	५५८	१५१९	उएस	कक्कसूरि	अजमेर	सोमा
६.	५८१	१६७४	तपा	विजयदेव	जयपुर	सिंधा
७.	१०२४	१७८१	-	कर्पुरप्रिय	रंगपुर	संवत्
८.	१४५२	१६२१	अंचल	धर्ममूर्ती	आगरा	हीरानन्द
९.	१५२४	१८७९	-	-	लखनऊ	दयाचन्द
१०.	१५३६	१९१०	खरतर	जिनमहेन्द्र	लखनऊ	हंसराज
११.	१५७६	७२	उसवाल	सिद्धसुरी	लखनऊ	सोहिल
१२.	१५८६	१८८८	खरतर	जिनाक्षय	लखनऊ	हरिमल
१३.	१६००	१९२४	विजय	शान्तिसागर	लखनऊ	रजुमल
१४.	१६०८	१९२४	विजय	शान्तिसागर	लखनऊ	प्रतापचन्द
१५.	११६६	१६८२	तपा	विजयसेन	चाडस	नरसिंह
१६.	११३२	१६७७	खरतर	जिनचन्द्र	मेडता	खिबुधा
१७.	-	१४६८	खरतर	जिनपद्म	जीरावला	खिबुधा
(स्रोत : '' जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह '' लेखक : कान्तिसागर मुनि)						
१८.	१५९	१५१६	खरतर	जिनचन्द्र	मुम्बई	कलाल

गोत्र : गोलेछा, गोलछा, गोलबच्छा (स्रोत : ''जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह'' लेखक : कान्तिसागर मुनि)

१९.	१५९	१८५६	खरतर	जिनचन्द्र	अजीमगंज	-
२०.	३४०	१८७७	-	जिनहर्ष	मधुबन	मूलचन्द
२१.	२१३१	१५१८	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर दुर्ग	समरा
२२.	२१८५	१५१३	खरतर	जिनभद्र	जैसलमेर दुर्ग	कर्मू
२३.	२१९८	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर दुर्ग	सच्चा
२४.	२३६४	१५७५	खरतर	जिनहंस	जैसलमेर दुर्ग	वीरम्
२५.	२४७६	१८१६	खरतर	जिनहंस	जैसलमेर दुर्ग	त्रिलोकसी
(स्रोत : ''प्रतिष्ठा लेख संग्रह'' लेखक : विजय सागर जी)						
२६.	१०७८	१६६९	खरतर	जिनसिंहसूरी	मेडता	देवसी

गोत्र : गोलेछा, गोलछा, गोलबच्छा (स्रोत : ''बीकानेर जैन लेख संग्रह'')

क्रम	शिलालेख क्रम	वर्ष	गच्छ	प्रतिष्ठापक आचार्य	स्थान	निर्माता श्रावक
२७.	१०१२	१५१८	खरतर	जिनचन्द्र	बीकानेर	डूँगर
२८.	११५४	१६६४	खरतर	जिनचन्द्र	बीकानेर	रूपा
२९.	१७९५	१८९७	खरतर	जिनोदय	बीकानेर	मुल्तनमल
३०.	१७९८	१८९७	खरतर	जिनोदय	विक्रमपुर	जेठमल
३१.	२६८१	१५७५	खरतर	जिनहंस	जैसलमेर	वीरम्
३२.	२४९२	१९०१	खरतर	हीरानन्द	लूणकरणसर	फूंसाराम
३३.	१८०२	१९२०	खरतर	जिनहेमसूरी	बीकानेर	वाघमल
३४.	-	१९२१	खरतर	जिनहंस	गिरनार	पूरणचन्द्र
(स्रोत : ''प्राचीन जैन लेख संग्रह'' लेखक : विजय धर्मसूरी)						
३५.	४७२	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	जामनगर	साजन

गोत्र : पारख, पारिख, परीक्ष, परीक्षि (स्रोत : ''जैन लेख संग्रह'' लेखक : पूर्णचन्द्रजी नाहर)

३६.	२१२६	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर	मूला
३७.	२१८९	१५१८	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर	सोनी
३८.	२१९७	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर	हासा
३९.	२४६३	१५१५	खरतर	जिनभद्र	जैसलमेर	सारगं
४०.	२५२१	१५१५	खरतर	जिनचन्द्र	अमरसागर	जयता
(स्रोत : ''प्रतिष्ठा लेख संग्रह'' लेखक : विजय सागर जी)						
४१.	५१२	१५१३	खरतर	जिनभद्र	केकडी	मोल्हा
४२.	१४४	१५९०	खरतर	जिनहंस	भिनाय	सोह
(स्रोत : ''शत्रुंजय गिरिराज दर्शन'')						
४३.	४४४	१५११	खरतर	जिनभद्र	शत्रुंजय	कर्मा
(स्रोत : ''बीकानेर लेख संग्रह'' लेखक : अगरचन्दजी नाहटा)						
४४.	९३०	१५०९	मडडाहडीय	नयणचन्द्र	बीकानेर	राऊल
४५.	९८७	१५१५	खरतर	जिनचन्द्र	बीकानेर	धन्ना
४६.	११००	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर	सालिग
४७.	११९५	१५४९	खरतर	जिनसमुद्र	बीकानेर	बेला
४८.	१८१७	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	बीकानेर	महिराज
४९.	२३४७	१४९३	चैस	पद्मदेव	राजलदेसर	माकल
५०.	२७११	१५३६	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर	मूला
५१.	२७३३	१५७६	खरतर	जिनसोमाग्य	जैसलमेर	डूगरसी
५२.	२७१७	१५७८	खरतर	जिनहंस	जैसलमेर	बीदा
५३.	२७८३	१६०३	खरतर	जिनमाणक्य सूरि	जैसलमेर	बीदा

५४.	४४६	१६५७	तपा	विवेकहर्ष	खाखर (कच्छ)	वीरा
(स्रोत : ''जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह'' लेखक : कान्तिसागर मुनि)						
५५.	२६२	१५५२	खरतर	जिनसमुद्रसूरी	मुम्बई	परबत

गोत्र : सावनसुखा, सांवसुखा, साहूसुखा, साधूसुखा, साऊशाखा (स्रोतः''जैन लेख संग्रह''-नाहर)						
५६.	२४२३	१५२८	खरतर	जिनचन्द्र सूरी	जैसलमेर	बोहित
५७.	२१४८	१५०९	खरतर	जिनभद्र	जैसलमेर	जेता
५८.	२१७१	१५१६	खरतर	जिनचन्द्र सूरी	जैसलमेर	नेमा

गोत्र : सावणसुखा (स्रोतः''बीकानेर जैन लेख संग्रह''-नाहटा)						
५९.	१५०४	१५६३	खरतर	जिनहंस	बीकानेर	सीहा
६०.	१८४३	१५०९	खरतर	जिनभद्र	बीकानेर	सखा
६१.	१९८०	१५०९	खरतर	जिनभद्र	बीकानेर	जेठा
६२.	२७५०	१५१६	खरतर	जिनचन्द्र	जैसलमेर	नेमा
(स्रोत : ''प्रतिष्ठा लेख संग्रह'' लेखक : विनयसागर जी)						
६३.	९३९	१५३८	खरतर	जिनहंससूरी	मेडतारोड	समउरा
६४.	९६५	१५७३	खरतर	जिनचन्द्रसूरी	मेडतासीटी	तोला
(स्रोत : ''आबू प्रदक्षिणा जैन लेख संग्रह'' लेखक : जयन्तविजय)						
६५.	१७९	१५२५	खरतर	जिनहर्षसूरी	भामराग्राम	साऊद्र
(स्रोत : ''बीकानेर जैन लेख संग्रह'' लेखक : नाहटा)						
६६.	४४	१५९३	खरतर	जिनमाणक्य सूरी	बीकानेर	हर्षा
६७.	७८८	१४९६	खरतर	जिनभद्र सूरी	बीकानेर	जेठा
६८.	२२२१	१५६३	खरतर	जिनहंस सूरी	देशनोक	सारंग
६९.	२३८७	१६०८	खरतर	जिनमाणक्यसूरी	सरदारशहर	कूपा
७०.	२८२३	१५०९	खरतर	जिनभद्रसूरि	जैसलमेर	जेता
(स्रोत : ''जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह'' लेखक : बुध्दिसागर सूरि)						
७१.	७०७	१५६८	खरतर	जिनभद्रसूरि	पेथापूर	देल्हा
७२.	८९७	१५२८	खरतर	जिनचन्द्रसूरि	अहमदाबाद	वेदण
(स्रोत : ''जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह भाग-२'' लेखक : बुध्दिसागर सूरि)						
७३.	७७	१५५५	खरतर	जिनहर्षसूरी	बरोदा	हस
७४.	४४३	१५२०	खरतर	जिनहर्षसूरी	खेडा	सिवा
७५.	६०५	१५२५	खरतर	जिनहर्षसूरी	खम्मात	हंस
७६.	६०६	१५२८	खरतर	जिनचन्द्रसूरि	खम्मात	पर्वत
७७.	६९०	१५२०	खरतर	जिनहंससूरी	खम्मात	डूगर

(स्रोत : ''जैन लेख संग्रह'' लेखक : नाहर)						
७८.	७८२	१६५३	तप	विनयसुन्दर	मेडता	सुरताण
७९.	९२८	१६३४	तप	देवगुप्त	बेडा	केहा
८०.	१०६६	१४६८	उपकेश	देवगुप्त	उदयपुर	देपाल
८१.	१५४६	१४९१	उपकेश	सिद्धसुरी	लखनऊ	सिवराज
(स्रोत : ''बीकानेर जैन लेख संग्रह'' लेखक : नाहर)						
८२.	९११	१५०७	उपकेश	सिद्धसूरी	बीकानेर	हांसा
(स्रोत : ''शत्रुंजय गिरीराज दर्शन'' लेखक : नाहर)						
८३.	१८३	१४००	खरतर	जिनराजसुरी	शत्रुंजय	अजल
(स्रोत : ''अरडक सोनी – जैन लेख संग्रह'' लेखक : नाहर)						
८४.	१४५१	१६६८	खरतर	लब्धवर्दन	आगरा	पूना
८५.	१४५७	१६१८	खरतर	जिनचन्द्रसूरि	आगरा	हीरानन्द
(स्रोत : ''आबू प्रदक्षिणा जैन लेख संग्रह'' लेखक : जयन्तविजय)						
८६.	२५८	१४६५	पूर्णिमा	जयप्रभसूरि	आबू	साहड
(स्रोत : ''बूचा – बीकानेर जैन लेख संग्रह'' लेखक : नाहटा)						
८७.	१४३१	१६०६	खरतर	जिनसमुद्रसुरी	बिकानेर	लखमण
(स्रोत : ''सिधर – जैन लेख संग्रह'' लेखक : नाहटा)						
८८.	१२२४	१५५५	खरतर	जिनसमुद्रसुरी	बीकानेर	-

महाजनों में विशिष्ट ७४.५ शाह हुए। इतिहासकारों ने उदयपुर के भामाशाह कावड़िया को आधा शाह ही स्वीकारा है।

इन सभी शाहों ने इतिहास की रचना की तथा वीरता, तप, दान, धर्म, राष्ट्र एवं जनकल्याण आदि क्षेत्रों में अपनी अद्‌भुत् एवं विशेष छाप छोड़ी और अमर हो गये। एक-एक शाह का जीवन चरित्र पठन-मनन योग्य है।

इन शाहों के क्रिया-कलापों के कारण ही समस्त मानवजाति में महाजन सर्वश्रेष्ठ कहलाए। ओसवालों को भोपाल (शासक) कहा गया। विश्व में केवल गेलड़ा गोत्र में जगतसेठ हुए। दानवीर पेथड़शाह, थारुशाह भन्साली, मोतीशाह, झगडू शाह, खेमा देदराणी, वस्तुपाल-तेजपाल, कँवरपाल-सोनपाल लोढ़ा, राजा भैरुशाह-राजा रामाशाह लोढ़ा (अलवर नरेश) भैंसाशाह चोरड़िया आदि जैन जगत के दमकते नक्षत्र हैं।

भैंसाशाह का जन्म कब हुआ, यह विवादग्रस्त विषय बन गया है। अधिकांश ओसवाल इतिहासकारों ने भैंसाशाह को चन्देरी के राजा खरहत्थसिंह राठोड़ की सन्तान माना है, जो ११ वीं सदी का समय है किन्तु ५ वीं एवं ७ वीं सदी के शिलालेखों में 'आदित्यनागीय चोरड़िया गोत्रीय भैंसाशाह ---' का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार विवाद उत्पन्न हो जाता है। अत: यह अधिक अध्ययन व शोध-खोज का विषय है।

ऐसी किम्वदन्ती है कि भैंसाशाह की माता ने एक दिन इच्छा व्यक्त की, कि वह जैन धर्म की सेवा और तीर्थ-यात्रा करना चाहती है। इस पर भैंसाशाह ने रथ, पालकी, अंगरक्षक, मुनीम, सेवक-सेविकाएँ और अर्थ आदि की व्यवस्था कर दी। भैंसाशाह की माताश्री ने शुभमुहूर्त में शत्रुञ्जय की यात्रा हेतु प्रस्थान किया। मार्ग में सभी मन्दिरों के दर्शन करती, जहाँ आवश्यक समझती वहाँ जीर्णोद्धार, प्रतिष्ठा, स्वामीवत्सल्य (भोज) कराती, प्रभावना बाँटती। धर्मलाभ लेती हुई वे (गुजरात की तत्कालीन राजधानी) पाटन पहुँची।

पाटन के मन्दिरों के दर्शन करने पर यह भावना जागृत हुई कि पाटन के मन्दिरों का भी जीर्णोद्धार आवश्यक है। अत: प्रधान मुनीम को आवश्यक आदेश दिये। तब मुनीम ने निवेदन किया कि अब तक बहुत सारे धन का व्यय हो चुका है। शत्रुञ्जय की यात्रा अभी शेष है। इस पर माताश्री ने आज्ञा दी कि पाटन के श्रेष्ठियों को भैंसा के नाम की हुण्डी देकर धन प्राप्त कर लो। वह हुण्डी स्वीकार लेगा।

मुनीम जी पाटन के श्रेष्ठियों के पास गये, तो उन्होंने कहा कि हुण्डी लिखेगा कौन? मुनीम श्रेष्ठियों को लेकर माताश्री के पास आया तो मुनीम को भैंसा के नाम हुण्डी लिखने हेतु माताश्री ने आज्ञा दी। इस पर सभी उपस्थित श्रेष्ठियों ने ठिठोली करते हुए कहा, ''माजीसा, भैंसा तो हमारे यहाँ पानी लाता है। डन्डे खाता है और पोठे (गोबर) करता है।''

ऐसा कथन कर श्रेष्ठी तो चले गये किन्तु माताश्री को यह अपमान सहन नहीं हुआ। इसे भैंसाशाह की, अपने परिवार की और स्वयं की प्रतिष्ठा पर कुठारापात समझा। अत: क्रोधित हो आदेश दिया कि तुरन्त भैंसा को इस अपमानित दुर्व्यवहार की सूचना दी जाये। मुनीम ने अविलम्ब दो घुड़सवारों को भैंसाशाह के नाम पत्र देने हेतु विदा किया। भैंसाशाह को सूचना मिलते ही पूर्ण तैयारी के साथ वह पाटन पहुँचे।

माताजी को सान्तवना देकर वे एक व्यापारी के वेष में पाटन के सभी श्रेष्ठियों के पास गये। तेल का व्यापार पाटन का प्रमुख व्यापार था। सभी श्रेष्ठी तेल के व्यापारी थे।

सारे गुजरात में तेल का बहुत उत्पादन होता जो भारत और अन्य देशों में बिकता था।

भैंसाशाह ने दो कार्य साथ-साथ किये। पहले तो सम्पूर्ण गुजरात के गाँव-गाँव में अपने प्रतिनिधियों को भेजकर प्रत्येक तेल उत्पादक से एक माह में जितना अधिक से अधिक तेल उत्पादन कर सकता है, अग्रिम क्रय हेतु अग्रिम धनराशि दे दी। अर्थात् कोई भी तेल उत्पादक किसी अन्य को एक बूँद भी तेल की बिक्री नहीं कर सके, ऐसी व्यवस्था कर दी। दूसरा स्वयं ने पाटन के प्रत्येक श्रेष्ठी से अधिक से अधिक एक माह के समय में जितना तेल दे सके उसकी अग्रिम राशि देकर लिखत प्राप्त कर ली, कि अगर वे समय के भीतर निर्धारित मात्रा में तेल न दे पाए तो उसके लिए उन्हें चौगुनी क्षतिपूर्ति देनी होगी।

पाटन के श्रेष्ठी गाँव-गाँव घूमे, किन्तु उन्हें तेल की एक बूँद भी प्राप्त नहीं हुई। निर्धारित समय के पूर्ण होने पर भैंसाशाह ने गुजरात के नवाब के सम्मुख अपना वाद प्रस्तुत किया। समस्त पाटन के श्रेष्ठियों ने अपनी असमर्थता व्यक्त की। नवाब ने क्षतिपूर्ति माँगने का अधिकार भैंसाशाह को दे दिया। पाटन के श्रेष्ठी अपना सर्वस्व देकर भी क्षतिपूर्ति का कुछ ही भाग दे सकते थे। अतः श्रेष्ठियों ने भैंसाशाह के सम्मुख उपस्थित होकर अपनी असमर्थता हेतु क्षमायाचना की। तब भैंसाशाह ने आदेश दिया कि क्षमा का प्रथम अधिकार तो माताश्री को ही है। मुख में घास लेकर माताश्री के सम्मुख जाकर क्षमा माँगो। उनके क्षमा करने के पश्चात् ही भैंसाशाह कुछ शर्तों पर क्षमा कर सकते हैं।

भैंसाशाह के आदेशानुसार सभी श्रेष्ठियों ने माताश्री की सेवा में उपस्थित होकर मुँह में घास लेकर निवेदन किया 'हे माता, हम आपकी गाय हैं, सन्तान हैं। आप माता हैं। सन्तान की उद्दण्डता को क्षमा करें।' माताश्री के क्षमा करने पर भैंसाशाह ने उन सभी की धोतियों की एक लांग खुलवा दी। उस समय समस्त महाजन धोती पहनते, जिसमें दो लांग लगाते थे। जैसी मारवाड़ के महाजन आज भी धोती पहनते हैं। लेकिन उस दिन से समस्त गुजराती एक लांग की धोती पहनने लगे। उसका कुल अर्थ यह हुआ कि गुजराती से मारवाड़ी श्रेष्ठ हैं। भैंसाशाह ने भी अनेक संघ निकाले। जन कल्याण के अनेक कार्य किये। मातृभक्ति के उपरोक्त उदाहरण ने उन्हें अमर बना दिया।

उन्होंने अपने गौरवमय इतिहास की रचना कर समस्त चोरड़िया गोत्र की महानता को दर्शाया। ऐसे महापुरुष को अपना पूर्वज स्वीकारने में प्रत्येक चोरड़िया व सहगोत्र के बन्धुओं को आनन्द और अभिमान अनुभव करना चाहिये।

समाज-भूषण श्री.नथमल चोरड़िया

राष्ट्रभक्त एवं प्रमुख समाजसेवी श्री. नथमल चोरड़िया के पूर्वजों का मूल निवास डीड़वाना था।

वे विक्रम सम्वत् १७७५ के आसपास नीमच छावनी आकर बसे। नथमल का जन्म सम्वत् १९३२ में हुआ। अल्पायु में ही उनके पिताश्री का देहान्त हो गया।

बड़ी कुशलता से उन्होंने अपना पारिवारिक व्यापार सम्हाला।

बम्बई में मेवाड़ के प्रसिद्ध करोड़पति सेठ मेघजी गिरधारीलाल की साझेदारी में कार्यारम्भ कर लाखों की सम्पत्ति अर्जित की। वे मूलत: ही सरल स्वभाव के एवं समाज सुधार के हामी थे।

महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर वे राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। स्वयं सत्याग्रह कर कई बार जेल गए। मालवा प्रान्तीय कॉन्ग्रेस समिति के वे सभापति निर्वाचित हुए।

हरिजनों की उन्नति के लिये उन्होंने पाठशालाएँ खुलवाईं और समाज के शैक्षणिक उत्थान के लिए उन्होंने दानकर्म किया।

७० हजार रुपयों की राशि का अनुदान देकर प्रदेश में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। उनके तपस्वी जीवन के कारण वे लोकप्रिय रहे।

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स ने उनको समाज-भूषण की पदवी से सम्मानित किया।

वे विधवा विवाह के समर्थक थे। सन् १९९३ में उनका देहान्त हुआ।

खद्दरधारी श्री. चाँदमल चोरड़िया

आगरा के विख्यात वकील श्री.चाँदमल चोरड़िया महात्मा गाँधी के अनन्य भक्त थे। उनका जन्म सम्वत् १९३९ में हुआ। पिता बाबू गुलाबचन्दजी जवाहरात का काम करते थे।

प्रतिष्ठान की बड़ी प्रतिष्ठा थी, उन्हें वॉईसराय और क्वीन मेरी के प्रमाणपत्र प्राप्त थे।

चाँदमलजी निरभिमानी और विचारशील युवक थे। वे आदर्शवादी थे। सदा सच्चे मुकदमे ही लेते थे।

उनके इस सिद्धान्त से प्रभावित होकर जज लायड साहब ने लिखित रूप में उनकी प्रशंसा की। विवाद निपटाने हेतु आयुक्त के पद पर प्रायः उनकी नियुक्ति की जाती।

जब मक्सीजी विवाद में दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय उलझ पड़े तो चोरड़ियाजी ने उन्हें सुलझाने के लिए अथक परिश्रम किये।

वे आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी के सदस्य थे। योग-प्राकृतिक चिकित्सा पर उन्हें अधिक विश्वास था।

वे आजीवन खद्दरधारी ही रहे। आगरा में वे पाँच वर्ष तक कॉन्ग्रेस के प्रधान रहे। सम्वत् १९७८ के गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया, कई बार कारागृह भी गए। अन्याय के विरुध्द लड़ने वाले वे जन्मजात विद्रोही थे। एक बार हाट में एक अंग्रेज़ शासक एक व्यक्ति को कोड़े मार रहा था, तब उसके बदले में स्वयं कोड़ों के शिकार हुए।

भरी पूरी वकालत को ठुकराकर स्वतन्त्रता आन्दोलन को समर्पित हो जाना उनकी देशभक्ति एवं गांधीजी के प्रति गहरी आस्था का परिचायक था।

सामाजिक सुधारों के प्रति भी वे सदा तत्पर रहते थे। ओसवाल महासम्मेलन के मुखपत्र 'ओसवाल सुधारक' का आगरा से सफल सम्पादन करने का श्रेय उन्हीं को है। सम्वत् १९९५ में उनका देहावसान हुआ।

पद्मश्री मोहनलाल चोरड़िया

श्री.मोहनलाल ओसवाल समाज के प्रेरणा स्त्रोत थे। उनका जन्म मारवाड़ के एक छोटे से गाँव-नोखा में सन् १९०२ में हुआ।

उन्हें मद्रास के प्रमुख व्यापारी श्री. सोहनलालजी चोरड़िया ने सन् १९१७ में गोद ले लिया और उसी वर्ष मद्रास की प्रसिद्ध फर्म 'अगरचन्द मानमल' के वे स्वामी हो गए।

वे बड़े कर्तव्यनिष्ठ एवं धर्मपरायण थे। विभिन्न धार्मिक एवं जन कल्याणकारी प्रवृत्तियों के लिये सन् १९३९ में जोधपुर महाराजा ने उन्हें सम्मानित कर पालकी एवं सिरोपाव दिया।

तामिलनाडू में रहकर मोहनलालजी ने वहाँ के जन-जीवन हितैषी शिक्षालयों, औषधालयों एवं महाविद्यालयों का निर्माण कराया।

'भगवान् महावीर अहिंसा प्रचार संघ' एवं रीसर्च फाऊन्डेशन फॉर जैनोलॉजी के अध्यक्ष रहे। अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के तो वे प्राण थे।

सन् १९७२ में भारत सरकार ने उन्हें सेवापरायणता के लिए 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया।

५ फरवरी १९८४ को उनका स्वर्गवास हुआ। करोड़पति होते हुए भी वे निरभिमानी कर्मयोगी थे।

नेपाल के 'जूट किंग' सेठ रामलाल गोलछा

अपने अध्यवसाय से समृद्धि प्राप्त कर ओसवाल समाज को गौरवान्वित करने वाले सेठ रामलालजी गोलछा का जन्म सन् १९०० में नवाबगंज (बांगलादेश) के साधारण व्यापारी परिवार में हुआ। उन्होंने शिक्षा भी अधिक नहीं पाई। पिता तनसुखलालजी ने हालाँकि महाजनी में पुत्र को दक्ष कर दिया।

१५ वर्ष की अल्पायु में उनका विवाह हुआ और उसके २ वर्ष बाद ही माता-पिता का देहान्त हो गया। यहीं से उनके जीवन ने एक दूसरा मोड़ ले लिया। घर के प्रति अब वे उत्तरदायी हो गए और नवाबगंज छोड़ सुन्दरगंज आ गये। वहाँ जूट का व्यापार आरम्भ किया।

थोड़े समय बाद फारबीसगंज में भी जूट के व्यापार की शाखा स्थापित की। सन् १९२६ में उन्होंने विराटनगर में प्रवेश किया-तब से भाग्यश्री उनपर प्रसन्न हुई।

उस समय विराटनगर एक पिछड़ा हुआ एवं वन्य-प्रदेश था। वहाँ जूट खरीदकर कोलकाता (कलकत्ता) के कारखानों में देना आरम्भ कर दिया। उन्हें सफलता तो मिली ही, साथ ही पूरा प्रदेश इस व्यापार से लाभान्वित हुआ।

सन् १९३५ में उन्होंने सेठ राधाकिशन चमड़िया को विराटनगर में जूट मिल स्थापित करने के लिये मना लिया। निःस्वार्थ सेवाएँ देकर उन्होंने जूट मिल को नेपाल का शीर्षस्थ उद्योग बना दिया।

गोलछा जी ने सन् १९४२ में विराटनगर में नेपाल राजघराने के सहयोगी से रघुपति जूट मिल की स्थापना की।

लाखों रुपयों का घाटा स्वयं सहन कर उन्होंने इसे चोटी के लाभप्रद उद्योग में बदल दिया। सन् १९५९ में उन्होंने हिमालय जूट प्रेस की स्थापना की। जूट निर्यात के व्यवसाय में उन्हें बहुत सफलता मिली और सरकार को विदेशी मुद्रा।

वे ऐसे पहले उद्योगपति थे जिन्होंने नेपाल से जूट निर्यात का कार्य आरम्भ किया। वे 'नेपाल के जूट किंग' नाम से प्रसिद्ध थे। सन् १९६३ में उन्होंने विराटनगर में स्वचलित चावल मिल की स्थापना की जो पूरे नेपाल में अपनी तरह की एक ही है।

सन् १९६३ में उन्होंने स्टेन्लेस स्टील के बर्तनों का कारखाना लगाया जो देश ही नहीं विदेशों की माँग की भी पूर्ति करता है।

नेपाल के राजाधिराज महेन्द्र ने नेपाल के विकास में सहयोग के लिए उन्हें सम्वत् २०२० में 'प्रवाल गोरखा दक्षिण बाहू' की उपाधि से सम्मानित किया।

जैन सूत्रों के प्रकाशन के लिए गोलछाजी ने लाखों रुपयों का अनुदान दिया।

उनके सुपुत्र श्री. हंसराजजी गोलछा भी सं. २०४२ में नेपाल सरकार द्वारा उक्त उपाधि से सम्मानित किये गए।

द्वितीय पुत्र श्री. हुलासचन्दजी गोलछा जन कल्याणकारी कार्यों में सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

लाला मोतीशाह गद्हिया

ओसवाल समाज ने भी देश के विभाजन उपरान्त हुए दंगों में अपना प्रमाणपत्र प्रविष्ट किया।

यह बड़े अभिमान की बात है। स्यालकोट (पाकिस्तान) में रहने वाले गद्हिया गोत्रीय लाला मोतीशाह के परिवार की पंजाब में प्रतिष्ठा थी।

लालाजी स्थानकवासी समाज के आजीवन प्रधान रहे। वे स्यालकोट नगरपालिका के सदस्य चुने गए। सरकार ने उन्हें अवैतनिक दण्डाधिकारी (आनररी मैजिस्ट्रेट) नियुक्त किया। नगर में कई जगह आपकी अचल सम्पत्ति थी। पंजाब के गणमान्य धनवानों में उनकी गणना थी। पाकिस्तान के निर्माण से नगर में अत्यधिक हानि उनके परिवार की हुई।

यह हानि मात्र आर्थिक सम्पत्ति की ही नहीं अपितु जनहानि भी हुई।

स्यालकोट में जब मुस्लिम लीग के गुण्डों ने जैन मोहल्ले पर आक्रमण किया तो उन्हें रोकने के लिए लालाजी के निवास पर ही मोर्चा कायम कर दिया और गोली का जवाब गोली से दिया गया।

मुस्लिमों के इस आक्रमण को असफल करने का श्रेय उनके परिवार को है। इसी आक्रमण में उनके छोटे भाई लाला खजांचीलाल गोली लगने से वीरगति को प्राप्त हुए।

पाकिस्तान की चपेट शेष परिवार पंजाब और दिल्ली में बस गया। दिल्ली में ७९ वर्ष की आयु में आपका देहान्त हुआ।

श्री. फूलचंद जैन 'पुष्प' जैन शास्त्री

श्री. फूलचंद का जन्म श्री. रिखबदासजी चोरड़िया के यहाँ सम्वत् १९७१ कार्तिक शुक्ल ५, को जैसलमेर में हुआ।

१९९३ में वे श्वेताम्बर जैन पाठशाला, जावरा, मध्यप्रदेश में अध्यापक नियुक्त हुए। उन्होंने धर्मशास्त्र का गहरा अध्ययन किया एवं धर्म अध्यापक हुए। सम्वत् २००६ में इन्दौर समाचारपत्र के पत्रकार के पद पर नियुक्त हुए।

उनके द्वारा प्रकाशित १२ पुस्तकों के नाम हैः

गौतम केवली शुक्लावलि	शिक्षा प्रदक संवाद
महाजन मास्टर	सामायिक सूत्रार्थ विधिजैन
धर्म प्रवेशिका	श्री. जिन गुण पुष्पांजलि
सुश्रावक समाचारी	जैसलमेर जैन गाईड
ओसवालों की उत्पत्ति	तीर्थ लोद्रवा यात्रा
साधु-सुधार	हिन्दी जैन शिक्षा-४ भाग

सम्वत् २००२ में आचार्य श्री. कान्तिसागरजी महाराज एवं उदयसागरजी महाराज ने श्री. फूलचन्द को 'जैन शास्त्री' की उपाधि से अलंकृत किया।

कलकत्ता में सम्वत् १९९६ में श्री. जैसलमेर सेवा समिति जैसी आदर्श संस्था की स्थापना की जो कि वर्तमान में भी विद्यमान है। रतलाम में श्री रत्नप्रकाश मण्डल और आनन्द प्रकाशन बाल मण्डल की स्थापना की।

श्री. फूलचन्द रतलाम के साहित्य-कार्य और कवि दरबार में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे।

श्री. मोहब्बतसिंह चोरड़िया

श्री. मोहब्बतसिंहजी चोरड़िया का जन्म सम्वत् १९२४ में श्री. अमूलसिंहजी चोरड़िया के यहाँ जैसलमेर में हुआ।

सं. १९४० में वे किसनगढ (जैसलमेर) के हाकम नियुक्त हुए। सं. १९४४ के दुष्काल में राज्य की ओर से एवं अपनी ओर से उन्होंने अन्नदान किया। वे एक कुशल लक्ष्यभेदी थे।

श्री. डूँगरसिंह चोरड़िया

श्री. डूँगरसिंहजी चोरड़िया (सुपुत्र श्री. मोहब्बतसिंहजी) श्री. हीरालालजी के दत्तक पुत्र थे।

उनका जन्म सम्वत् १९५३ फाल्गुन शुक्ल १३ को झालरा पाटन में हुआ। वे रतलाम चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष, रतलाम मर्चेन्ट असोसिएशन के अध्यक्ष, काश्तकारी सहकारी बैंक के संचालक, दी रतलाम इलॅक्ट्रिक सप्लाई एवं वीविंग मिल्स् कम्पनी के संचालक, रखबदास ऊँकारलाल लछीराम सारड़ा की पेढी के अध्यक्ष, श्री गोपाल गौशाला के संचालक तथा देवस्थान समिति के सदस्य थे।

स्व. श्री. लीलाधर पारख

अहमदाबाद के ओसवाल पारख गोत्र के जसु के पुत्र लीलाधर आ. कल्याणसागर सूरी के भक्त थे। इनके उपदेश से उन्होंने अनेक सुकृत्य किये।

उनकी पत्नी साहिबा एवं पुत्री धनबाई थी। इन्होंने 'अवन्ति सुकुमार एडस्' का लेखन कराया और सम्वत् १७०४ पौष शुक्ल ४ रविवार को इसका लेखन कार्य सम्पन्न हुआ।

लीलाधर ने सम्वत् १८९० के चतुर्मास में श्री. वीरप्रभु की स्वर्ण-प्रतिमा का निर्माण कराया।

कल्पसूत्र को स्वर्ण-अक्षरों से लिख मेरुतुंगसूरी कृत पट्टावली का लेखन कराया और आ. कल्याणसागर सूरी को बहराई।

अहमदाबाद के कोकाना पाड़ा में धनजी और मनजी नामक दो भाईयों के साथ लीलाधर रहते थे।

लीलाधर ने सन् १७१२ में शत्रुंजय का विशाल संघ निकाला, जिसमें ४०० मन सोने का व्यय हुआ। शत्रुंजय यात्रा करके संघ देलवाड़ा, अंजारा, कोडीनार, माँगरोल, गिरनार, जुनागढ़, शंखेश्वर पार्श्वनाथ, माण्डल, वीरमगाँव से अहमदाबाद लौटा।

सन् १७१५ भादवा शुक्ला ६ को लीलाधरजी का स्वर्गवास हुआ।

श्री. जेठमल गद्दैया का परिवार, सरदारशहर

शेठ श्री. जेठमल गद्दैया वि.स. १९०६ में सरदारशहर से धन अर्जन हेतु बंगाल गये। वहाँ सं. १९२८ तक कलकता में वस्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया।

संसार से विरक्ति की भावना जागृत होने के कारण व्यापार अपने पुत्र श्रीचन्दजी को सौंप वे सरदारशहर लौटे। धर्म का रंग चढ़ने लगा। श्रावक धर्म स्वीकार किया। त्याग और तपस्या से कर्मों का क्षय करने लगे।

पूर्ण ब्रह्मचर्य वृत्त अंगिकार किये। तीन करण (करना, कराना और अनुमोदन) और तीन योग (मन, वचन और कर्म) से जीवनपर्यन्त पालन किया।

रूई के गद्दे, रजाई का उपयोग त्यागा, नंगे पैर चलते, कच्चे जल का त्याग किया अर्थात् स्नान में भी गर्म जल का उपयोग करते। ४० व्यक्तियों से जहाँ अधिक का भोज होता, उस भोज में भी समावेशन का त्याग था।

परिणामस्वरूप वे अपने पौत्र के विवाह में भी सम्मिलित नहीं हुए। एक दिन में ९ द्रव्य ही प्रयोग कर सकते थे। जिनमें दातून और जल भी समाविष्ट था। प्रदर्शन और आडम्बर का निषेध था। सवारी का त्याग करने और एक कोस से अधिक पैदल न चलने के कारण वे सरदार शहर के बाहर १९२८ के पश्चात् आजीवन नहीं निकले।

अपनी सम्पत्ति सीमित रखकर वे अपरिग्रही हो गये। उन्होंने अपने परिवार में सर्वप्रथम तेरापंथ सम्प्रदाय स्वीकारा। वे त्यागी, बैरागी और धर्म अनुरागी श्रावक थे।

सेठ साहब श्री. श्रीचन्द्र गद्दैया

श्री. श्रीचन्द्र जी गद्दैया सेठ जेठमलजी के इकलौते पुत्र थे। वे अपने क्षेत्र के प्रख्यात व्यक्ति होने के साथ-साथ श्री श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के संस्थापक भी थे।

जहाँ कहीं जैन धर्म विरोधी नियम होता, वहाँ वे हृदयपूर्वक उसका विरोध करते। अन्य स्थानों में भी विरोध करने पहुँच जाते थे। वे समाज की कु-प्रथाऐं एवं उनकी बनी रुढ़ियों का भी विरोध करने में अग्रणी रहते थे।

इस हेतु मृतक के पीछे उच्छाल करना, धन वितरण करना, भोज करना, मिठाई बाँटना इत्यादि कार्य सम्मिलित थे। तपस्या के पीछे आडम्बर का विरोध करते।

उन्होंने आजीवन समस्त समाज के संगठन कार्य किया। अतिथि सत्कार तो उनके जीवन का अंग था। सभी प्रकार की सेवा करने के साथ श्रावक के आदर्शों का वे अनुकरण करते रहे।

सरकार ने उनकी अनेक विशेषताओं से प्रभावित होकर उनको सोना बख्शने का निश्चय किया तब उन्होंने सरकार से इस प्रस्ताव का सम्मान सहित विरोध करते हुए कहा कि ''इससे अहंकार का उदय होता है, अत: मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।''

उन्होंने अनेक संस्थाओं का गठन किया पर किसी भी संस्था का अध्यक्षपद नहीं स्वीकारा। मात्र कोषाध्यक्ष ही रहे।

कलकत्ता में उन्होंने अपने पिताश्री के वस्त्र व्यवसाय का विस्तार किया।

उनके प्रतिष्ठान की प्रामाणिकता की छाप समस्त बंगाल में थी। सादा जीवन तथा उच्च-आदर्श उनकी पैतृक सम्पति थी। संक्षेप में, उनके आदर्श अनुकरणीय हैं।

सेठ श्री. गणेशदास गद्दैया, सरदारशहर

सेठ श्री. श्रीचन्द्रजी गद्दैया के तीन पुत्र हुए, श्री. उदयचन्दजी और उनकी पत्नी ने श्रमण-श्रमणी धर्म स्वीकारा।

श्री. गणेशदास की ओर से श्री. वृद्धिचन्द ने परिवार का दायित्व स्वीकारा। वे कुशल व्यवसायी थे।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी से उनका व्यापार हुआ करता था, जिसके कारण उनके व्यापार में बहुत विस्तार हुआ।

वे भारत चेम्बर ऑफ कॉमर्स के संस्थापकों में से एक थे। एक बार वे इसके एवं श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के भी अध्यक्ष रहे। बीकानेर राज्य में उनकी एम्.एल्.ए. के पद पर नियुक्ति हुई।

बंगाल में राज्यपाल के दरबार में उनका विशेष स्थान था।

वे इतिहास-तज्ञ और श्रेष्ठ वक्ता थे और दाढीवाले सेठ के नाम से विशेष रूप से पहचाने जाते थे।

दीर्घकाल तक उन्होंने श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ की सेवा की। उनके अनुज श्री. वृध्दिचन्द बीकानेर राज्य के विधायक रहे। वे श्रेष्ठ विचारक भी थे।

सभी समाज के व्यक्ति उनसे परामर्श लिया करते थे। सेठ श्री. गणेशदास ने सेठ श्री. वृध्दिचन्द के पुत्र श्री. नेमीचन्द को गोद लिया।

सेठ श्री. नेमीचन्द गद्दैया

सेठ श्री. नेमीचन्द गद्दैया भी अपने पिता और दादा से बढ़-चढ़कर निकले। अपनी पैतृक उत्तराधिकार में बहुत वृद्धि की। व्यापार के साथ धार्मिक, सामाजिक, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में अपना प्रभाव बनाये रखा।

वे बीकानेर स्टेट के विधायक रहे। निम्न संस्थाओं के अध्यक्षपद को उन्होंने सुशोभित किया।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थ महासभा कलकत्ता, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह, राजस्थान प्रान्तीय अणुव्रत समिति, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थ सभा, सरदारशहर, राजस्थान प्रान्तीय भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण महोत्सव ने उन्होंने समाजरत्न के अलंकार से अलंकृत किया तथा अखिल भारतीय भारत जैन महामण्डल के उपाध्यक्ष-पद को सुशोभित किया।

अखिल भारतीय भगवान् महावीर २५०० वें निर्वाण महोत्सव सभा हैदराबाद के वे सभापति रहे तथा उस समय समाज ने उनको 'समाजभूषण' अलंकार से अलंकृत किया।

वे पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संस्थापक थे। सन् १९३९-४५ के द्वितीय विश्वयुद्ध एवं १९४०-४८ तक के वस्त्र के अकाल के समय उन्होंने सरदार शहर की जनता को वस्त्रों का वितरण किया।

तेरापंथ संघ के ७५० श्रमण और श्रमणियों को वस्त्रदान दिये। सन् १९४७ के हिन्दू-मुस्लिम दंगों की शान्ति समिति के वे अध्यक्ष रहे।

३६ वर्ष की आयु में उन्होंने ब्रह्मचर्य-नियम अंगिकार किया। वे प्रमुख समाज सेवी, धर्म परायण और जन कल्याणकारी थे।

उन्होंने अनेक संस्थाओं का निर्माण व संचालन भी किया।

स्व.श्री.रणजीतलाल चोरड़िया-उदयपुर

स्वतन्त्रता सैनानी श्री. रणजीतलाल चोरड़िया का उदयपुर में विशिष्ट स्थान था।

वे निष्ठावान कान्ग्रेसी थे। श्री. जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गाँधी के निकट, सम्पर्क में रहे। उन्होंने असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह में विशेष भाग लिया।

१७ वर्षों तक वे उदयपुर शहर के कार्पोरेटर रहे।

नगर परिषद बनने के पश्चात् वे दो बार चुनाव जीते और कौन्सिलर बने। उदयपुर के चोरड़िया समाज के वे सिरमोड़ रहे।

श्री.कुन्दनमल चोरड़िया-आसीन्द, भीलवाड़ा

श्री.कुन्दनमल चोरड़िया, आसीन्द (ज़िला-भीलवाड़ा) व आस-पास के क्षेत्र के प्रख्यात समाज सेवी एवं राजनीतिज्ञ थे। जन-कल्याण के कार्यों में भी उन्हें रुचि थी।

मुख्यमन्त्री मोहनलाल सुखाड़िया के कार्यकाल में आसीन्द कान्ग्रेस के अध्यक्ष रहे।

भीलवाड़ा ज़िले के वे प्रतिष्ठित समाजसेवी थे।

स्व. स्वरूपचन्द हस्तीमल चोरड़िया- भुसावल

श्री.चोरड़िया खानदेश के तेरापंथ समाज के अध्यक्ष थे। उन्होंने अनेक सन्तों के साथ कुल १८,००० मील की पदयात्रा की। इसी प्रकार उनकी पत्नी श्रीमती केशरबाई ने भी महासतियों के साथ २८,००० मील की पदयात्रा की।

इस पदयात्रा के समयं चूल्हे-चौके की सम्पूर्ण व्यवस्था उन्होंने अपनी ओर से की।

फलस्वरूप आचार्य श्री. तुलसी ने उन्हें ''श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'' तथा 'समाज-रत्न' अलंकार से अलंकृत किया।

उनके पिता और प्रपिता तेरापंथ श्रमण श्री. हस्तीमलजी स्वामी और श्री. शिवराजजी स्वामी हुए।

उन्हीं की आध्यात्मिक सेवा का प्रभाव इन पर भी पड़ा।

स्व. श्री.कपूरचन्द चोरड़िया, (जलगाँव)

श्री. चोरड़िया खिंवसर ज़िला-नागौर के निवासी थे। पूर्वज पारोला महाराष्ट्र में आकर बस गए।

उन्होने अपनी भूमि स्थानक हेतु उन्होंने समाज को प्रदान की, जिस पर समाज ने स्थानक का निर्माण किया। पारोला में अपने समाज हेतु महावीर नगर का निर्माण कराया।

स्वतन्त्रता सैनानी स्व.श्री.राजनकुमार पन्नालाल चोरड़िया, (जलगाँव)

श्री. राजनकुमार चोरड़िया ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। गोवा मुक्ति संग्राम में भी वे अग्रणी रहे।

१० वर्षों तक जलगाँव ज़िले के सरकारी वकील रहे। वे भ्रष्टाचार के कट्टर विरोधी थे और समस्त समाज में ''गॉडफादर'' के नाम से पहचाने जाते थे।

उनके भाई श्री.शान्तिलाल चालीसगाँव के संघपति थे।

स्व.श्री.माँगीलाल पारख, (अजमेर)

स्व.श्री.माँगीलाल पारख के पूर्वज बीकानेर से आकर अजमेर में बस गये।

श्री. माँगीलाल दादागुरु आचार्य श्री. जिनदत्त सूरी के अनन्य भक्त थे।

उन्होंने १९५२ में श्री. जिनदत्त सूरी मण्डल की स्थापना की। २५ वर्षों तक इस संस्था के अध्यक्ष-पद को सुशोभित किया। भारत भर में उन्होंने 'अर्थ संग्रह' कर अजमेर दादावाड़ी के विकास एवं विस्तार में बहुत योगदान दिया।

श्री. पोपटलाल भागचन्द ओस्तवाल, पुणे

श्री. ओस्तवाल का जन्म दिनांक ११ मई १९५३ को हुआ। वे पुणे व्यापारी संघटन, पुणे मर्चन्टस् चेम्बर, आनन्दतीर्थ, श्री लक्ष्मी को ऑप. बैंक पुणे, रामगोपाल प्राथमिक स्कूल, श्री जैन समाज संघ पुणे के अध्यक्ष, श्री वर्धमान जैन स्थानक बिबवेवाडी के कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कॉमर्स (मुम्बई) के अध्यक्ष तथा फेडरेशन ऑफ असोसिएशन ऑफ महाराष्ट्र के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं।

श्री.ओस्तवाल सामाजिक, व्यापारिक तथा आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहते हैं।

श्रीमती रत्नादेवी गेन्दमल ओस्तवाल, राजनान्दगाँव(छत्तीसगढ़)

श्रीमती रत्नादेवी का जन्म २८ दिसम्बर १९४८ को हुआ। बी.एस्.सी (ऑनर्स) एवं एल् एल्.बी. की शिक्षा के पश्चात् उन्होंने हिन्दी अंग्रेजी एवं जॅनोलॉजी (मास्टर की उपाधि) और ॲक्यूप्रेशर में भी डिप्लोमा प्राप्त किया है। समाजसेवा में वे एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था हैं। स्थानीय ही नहीं अपितु प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी वे प्रतिष्ठित एवं सन्मानित हुई हैं। समाजसेवा के क्षेत्र में कई 'स्वयंसेवी संस्था जैसे समता मंच, कस्तूरबा महिला मण्डल, जैन महिला मण्डल (संरक्षिका, अध्यक्षा और प्रेरणास्रोत), अखिल भारतीय साधू मार्गी जैन महिला संघटना (कई वर्षों तक राष्ट्रीय महामन्त्री, वर्तमान में उपाध्यक्ष), जैन संगठना (अखिल भारतीय स्तर एवं राज्यस्तर की कार्यकारिणी) की सदस्या हैं ।

लायन्स् इण्टरनैशनल महिला विंग की बहु-प्रान्तीय अध्यक्षा रही हैं। मध्यप्रदेश के समाजसेवी कार्यों के बतौर मानवाधिकार आयोग, बाल श्रमिक उन्मूलन, उपभोक्ता संरक्षण, खाद्य निगरानी समिति, यू.बी.एस्.पी., विशाल कल्याण केन्द्र की कार्यकारिणी सदस्या हैं। वर्तमान में श्रीमती रत्ना ओस्तवाल ''मनोकामना'' नामक मन्द बुद्धि बच्चों हेतु मनोविकास शाला की संचालिका है।

व्यसनमुक्ति एवं शाकाहार सदाचार तथा बालक बालिकाओं की नैतिक दक्षा एवं संस्कार अभियान में रत्नाजी का योगदान अतुलनीय, उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय है। नारी जागरण के क्षेत्र में महानगरों से आदिवासी क्षेत्रों में भी क्रान्ति का शंखनाद किया है। वे स्वाध्याय एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में एक श्रेष्ठ वक्ता और व्याख्यानी के रूप में प्रान्त भर में आमन्त्रित होती रहती हैं।

श्रीमती रत्नादेवी को श्रेष्ठ वक्ता, उत्कृष्ट मंच संचालक, अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्नता, अजय नेतृत्व क्षमता आदि हेतु अनेकों पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है। महिला रत्न, श्रेष्ठ समाज सेविका, श्रेष्ठ मल्टीपल प्रेसिडेंट, ज्योतिषी रत्न, श्रेष्ठ स्वाध्यायी एवं छत्तीसगढ़ की मदर टेरीसा अदि अलंकारों से उन्हें समाज द्वारा समय-समय पर सन्मानित किया गया है। इन सबसे बढ़कर ''मैन ऑफ अचीवमेंट'' (सर्वश्रेष्ठ स्वाध्यायी १९९८-९३) से वे अलंकृत हैं। वे देश के अनेक नगरों एवं शहरों में प्रतिवर्ष स्वाध्यायी प्रशिक्षिका की सेवाओं से समाज को लाभान्वित करती रहती हैं।

श्री. कुशलराज कोठारी (पारख), गिरगाँव (मुंबई)

घाणेराव निवासी श्री. कुशलराज का जन्म दिनांक २६ दिसम्बर १९३४ में हुआ। मुम्बई, नागपुर तथा जयपुर में उनका पेन्सिल उद्योग है। मुख्यालय मुम्बई है। श्री. कोठारी श्री मरूधर विद्या मन्दिर (विद्यावाडी), श्री वरकाणा पार्श्वनाथ विद्यालय (वरकाणा), श्री जैन शिक्षण संस्थान फालना के अग्रणीय सदस्य हैं। उन्होंने देसूरी के पास काणापीर दरगाह एवं उसके भव्य द्वार इ. का निर्माण कराया।

श्री कोठारी श्री ओसवाल जैन आदिनाथ पेढ़ी (घाणेराव) के मुख्य विश्वस्त हैं। राजस्थान के अकाल में उन्होंने लाखों रुपयों का दान देकर पुण्यार्जन का कार्य भी करवाया। हर सामाजिक व धार्मिक कार्य में वे सहयोग देते हैं।

श्री. महेंद्र कोठारी (चोरड़िया), काँकरोली

श्री. महेन्द्र कोठारी का जन्म २० मार्च १९४३ को श्री. राजमलजी कोठारी के यहाँ काँकरोली में हुआ। वे महावीर इन्टरनॅशनल राजसमन्द (१९९८-२०००), रोटरी क्लब राजस्थान (१९८९-९०), भारतीय शिक्षा प्रचार समिति उदयपुर के मन्त्री रहे। श्री. तेरापंथ युवक परिषद काँकरोली के ६ वर्षों तक अध्यक्ष रहे। श्री. कोठारी वर्तमान में तेरापंथ सभा (कांकरोली) के मन्त्री हैं।

समाज भूषण श्री.सम्पतकुमार गद्दैया, सरदारशहर (राजस्थान)

श्री. सम्पतकुमार का कलकत्ता में पैतृक वस्त्र व्यवसाय है। उन्हें समाजसेवा, धर्मपरायणता, जनकल्याण की भावना उत्तराधिकार में मिली। वे भगवान् महावीर २५०० वीं निर्वाण समिति (राजस्थान) के प्रधानमन्त्री थे। वर्तमान में भगवान् महावीर २६०० वीं जयन्ति समिति के संयोजकों में हैं। गौशाला कलकत्ता के महामन्त्री, भारत चेम्बर ॲण्ड कॉमर्स की टेक्स्टाईल ॲण्ड यार्न कमेटी के अध्यक्ष हैं। टेक्स्टाईल मर्चेण्ट ॲण्ड इन्डस्ट्रीज चेम्बर के संस्थापक हैं। इसके अपीलेट कोर्ट के अध्यक्ष के अतिरिक्त 'मनोहरदास कटरा (कलकत्ता) मूंगापट्टी ट्रेडर्स असोसिएशन' के संस्थापक अध्यक्ष रहे। श्री. गद्दैया तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष हैं। अनेक वर्षों तक उन्होंने तेरापंथ सभा सरदारशहर, के अध्यक्ष पद एवं तेरापंथ सभा जयपुर, के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। सिरियारी में भिक्षु-स्मारक और केलवा में अन्धेरी ओरी स्मारक के भी संचालक रहे। आचार्य भिक्षु का स्मारक लुप्त हो गया था, उसकी पुनः स्थापना कराई। भारत जैन महामण्डल राजस्थान की संस्था के कोषाध्यक्ष हैं अखिल भारतीय जैन महामण्डल के संगठन, मन्त्री एवं उपाध्यक्ष रहे। १९७७ में अखिल भारतीय जैन महामण्डल, हैदराबाद के वृहद् अधिवेशन में 'समाज भूषण' अलंकार से अलंकृत किया गया। उनकी पत्नी श्रीमती सुन्दरकुमारी गद्दैया ने सरदार शहर में सर्वप्रथम परदा-प्रथा का बहिष्कार किया। पुत्रवधु स्वयंप्रभा 'अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन' की महिला शाखा की उपाध्यक्षा हैं। कलकत्ता में उन्होंने समाज सुधार के अनेक कार्य किये। सामुहिक विवाह की परम्परा प्रारम्भ की, कुएँ

खुदवाए। उन्हें शिक्षा और साहित्य में विशेष रुचि है। वे एक अच्छे वक्ता हैं।

उनके एक पुत्र श्रेयंश कुमार, जिसे अपने पूर्वजन्म का ज्ञान था, बाल्यावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। परिवार के पित्तर हैं।

श्री. सुरेश हस्तीमल गादिया, चिंचवड (पुणे)

श्री. सुरेश गादिया प्रतिभावान नवयुवक हैं। चिंचवड स्टेशन व्यापारी एसोसिएशन के मंत्री हैं। पिंपरी-चिंचवड महानगर की भारतीय जनता पार्टी तथा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ चिंचवड के महामन्त्री हैं। वे सभी स्थानीय जैन संस्थाओं से संबद्ध हैं।

श्री. माणकचन्द हस्तीमल गादिया, कोईम्बतूर

श्री.माणकचन्द गादिया का जन्म २२ जनवरी १९५२ को आसीन्द के समीप के ग्राम में हुआ। उनका कार्यक्षेत्र कोईम्बतूर रहा। वर्तमान में वे 'द कोईम्बतूर ज़िला पावन ब्रोकर असोसिएशन' के अध्यक्ष हैं।

श्री.गादिया 'भगवान महावीर जैन पब्लिक औषधालय समिति' के विभिन्न पदों पर गत २० वर्षों से आसीन थे। गत ४ वर्षों से वे इस समिति के अध्यक्ष हैं।

श्री. अमरचन्द खिंवराज गादिया, पाली (मारवाड)

श्री.अमरचन्द का जन्म २२ अप्रैल १९२५ को हुआ। वे श्री तेरापंथ महासभा कलकत्ता के उपाध्यक्ष व गत १८ वर्षों से श्री तेरापंथ सभा पाली के अध्यक्ष हैं।

जैन संघ पाली के ४ वर्ष तक अध्यक्ष व ४ वर्षों तक मन्त्री रहे। तेरापंथ स्कूल व कॉलेज राणावास के गत ५० वर्षों से सक्रीय कार्यकर्ता, जिनमें ८ वर्ष तक अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

महिला शिक्षण संघ राणावास के भी ३५ वर्षों तक कार्यकारिणी के विभिन्न पदों पर रहे, जिनमें ८ वर्षों तक अध्यक्षपद की सेवाएँ दी।

क्लॉथ मर्चेन्ट असोसिएशन पाली एवं न्याय समिति के भी वे अध्यक्ष रहे। इस तरह वे अनेक संस्थाओं की सेवा करते रहे हैं और ईश्वर से प्रार्थना है कि दीर्घकाल तक समाज उनकी सेवाओं का लाभ उठाता रहे।

श्री.सोहनचन्द गादिया-वॉटर बेसिन स्ट्रीट, चैन्नई

श्री.गादिया मूल जोधपुर के निवासी हैं। कर्मक्षेत्र चैन्नई रहा। उनमें समाज के विकास और संगठन की प्रबल भावना है।

तामिलनाडू के चोरड़िया व सहगोत्रों के परिवारों के परिचय संकलन में आपका विशिष्ट योगदान रहा।

श्री.मांगीलाल तिलकचन्द गुलेच्छा, अमलनेर

श्री. गुलेच्छा पांजरापोल अमलनेर के अध्यक्ष हैं। दादागुरु मण्डल के कोषाध्यक्ष, इच्छापूर्ती माता मन्दिर-अध्यक्ष, जय बजरंग मण्डल-उपाध्यक्ष तथा विश्व हिन्दु परिषद अमलनेर तहसील के मन्त्री हैं।

श्री. मिलापचन्द जोगराज गुलेच्छा, अहमदाबाद

श्री.मिलापचन्द गुलेच्छा का जन्म दि. २६ जून १९३४ को फलोदी में हुआ। अहमदाबाद में उनका वस्त्र का व्यापार है। उनके इस प्रतिष्ठान को प्रमाणित माना जाता है। जैन धर्म की सर्वश्रेष्ठ 'आनन्दजी-कल्याणजी पेढ़ी' का १५ वर्षों से फलोदी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहें हैं। उन्होंने १० मन्दिरों एवं ६ दादावाड़ियों के निर्माण में योग प्रदान किया है। खरतर गच्छ में उनका वर्चस्व है।

डॉ. प्रकाश ज्ञानचन्द गुलेछा, जयपुर

डॉ. गुलेछा कान, नाक और गले के विशेषज्ञ हैं। वे ६०० से अधिक शिविरों में सम्मिलित हुए। इन शिविरों के माध्यम से राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, गोहाटी (आसाम) मुम्बई आदि में २ लाख से अधिक रोगियों को चिकित्सा-सेवा प्रदान की एवं जिन रोगियों के लिये शल्यक्रियाएँ करना अनिवार्य था, उनके लिये शल्यक्रियाएँ भी की। नगर निगम जयपुर, राजस्थान सरकार अन्तरराष्ट्रीय रोटरी (लग्न३) जैसी अनेक संस्थाओं ने उनका सम्मान किया। डॉ. गुलेछा के दादा जयपुर दरबार के दरबारी थे।

श्री. सज्जन राज गोलेच्छा, पाली

श्री. सज्जनराज गोलेच्छा का जन्म ७ फरवरी १९५५ में हुआ। टेक्सटाईल, छपाई एवं रंगाई उद्योगपति (पाली) तथा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, (पाली) के ४ वर्षों से सचिव हैं। लायन्स क्लब (पाली) के मन्त्री एवं अध्यक्षपद पर भी वे आसीन हैं। १२ वर्षों से वे श्री मरूधर केसरी जैन स्मृति ट्रस्ट के विश्वस्त एवं हाऊसिंग बोर्ड स्कूल विकास परिषद (पाली) के भी अध्यक्ष हैं।

श्री. सुरेश गोलेच्छा-खीचन

श्री.गोलेच्छा का जन्म १७ जुलाई १९४४ को हुआ। वे १९८९ से १९९२ तक खीचन पंचायत के सरपंच एवं काँग्रेस के सक्रीय कार्यकर्ता रहे हैं। उनकी पत्नी श्रीमती निर्मलादेवी वर्तमान में सरपंच हैं।

श्री. मदनलाल गोलेछा, बालेसर

४५ वर्षीय श्री. मदनलाल बालेसर निवासी काँग्रेस के सक्रीय कार्यकर्ता तथा कृष्णा सेवा समिती बालेसर के अध्यक्ष हैं। वृध्दों, विकलांगों एवं सेवा-निवृत्त व्यक्तियों की सेवा में आपको विशेष रुचि है। चिकित्सा सेवा एवं नेत्र शिबिरों में उनकी विशेष सेवाओं के फलस्वरूप २६ जनवरी २००१ को प्रधान बालेसर ने सम्मानपत्र द्वारा सम्मान किया। श्री. गोलेच्छा ओसियाँ जैन स्कूल एवं बोर्डिंग एवं चक्षूसेवा समिती चाँदी हॉल जोधपुर, के सदस्य हैं।

श्री. फतेहचंद चोरड़िया, पुणे

श्री. फतेहचंद पुणे के पास चव्हेली ग्राम के निवासी हैं। उन्होंने देहात में रहते हुए शिक्षा-प्रोत्साहन हेतु अनेक पारिवारिक छात्रों की सहायता की। आजीवन चव्हेली ग्राम के वे सरपंच रहे। समाज-विकास के लिये सदा तत्पर रहे। पुणे में बसने के पश्चात् ओसवाल बन्धु समाज नामक संस्था का गठन किया। आज इस

संस्था की वार्षिक आय ७ करोड़ से अधिक है। कल्याण सोसायटी, सुपार्श्वनाथ सोसायटी जैसी अनेक गृहरचनाएँ की। अनेक स्थानकों का उन्होंने निर्माण कराया। वे दानवीर व्यक्ति हैं।

श्री. संतोष कचरादास चोरड़िया, नासिक

श्री. संतोष चोरड़िया का जन्म दि. ११ फरवरी १९३२ में हुआ। वे अपने भवन निर्माण कार्य के साथ धार्मिक कार्यों और राजनीति में लिप्त हैं। 'उत्तर महाराष्ट्र कॉन्ग्रेस सेवा दल', 'जैन युवक मण्डल नासिक' के अध्यक्ष और 'नासिक बिल्डर्स असोसिएशन' के वे सदस्य हैं।

श्री. नन्दलाल दलिचन्द चोरड़िया, नासिक

श्री.चोरड़िया का जन्म २१ सितम्बर १९५५ को निफाड़ ज़िला नासिक में हुआ। वे निफाड़ अर्बन को-ऑपरेटिव बँक के संचालक हैं।

बाल मुक्तांगन अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के अध्यक्ष, गणपति मन्दिर नांदुर्डी, लोनजाई माता मन्दिर के विश्वस्त एवं विदामबाई दलिचन्द चोरड़िया जैन स्थानक के संस्थापक सचिव हैं।

प्रो. सुभाषचन्द चोरड़िया, अमलनेर

श्री.चोरड़िया महाविद्यालय में प्राध्यापक हैं। वे 'ऑनररी एनिमल वेलफेयर ऑफिसर' तथा 'भारतीय जैन संघटना' अमलनेर, के संचालक हैं।

सौ. सज्जनदेवी नगीनचन्द चोरड़िया, भुसावल

श्रीमती सज्जनदेवी तेरापन्थ महिला मण्डल की अध्यक्षा, भारतीय जैन संघटना की उपाध्यक्षा तथा तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान एवं सुशील बहू मण्डल की सदस्या हैं।

धार्मिक ज्ञान में उन्हें विशेष रुचि है।

श्री. रमेशचन्द्र आसकरण चोरड़िया-शहादा, ज़िला नन्दुरबार

श्री. रमेशचन्द्र चोरड़िया श्री. महावीर नागरी सहकार पतपेढ़ी के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

शहादा पीपल्स् बँक, शहादा, नन्दुरबार ज़िला नागरी सहकार पतपेढ़ी असोसिएशन शहादा, के उपाध्यक्ष हैं। भोगराज प्रेमराज बाफना राजस्थानी मंगल कार्यालय शहादा के कोषाध्यक्ष हैं।

अंबाजी सांस्कृतिक मण्डल शहादा, दादावाडी शहादा, ओसवाल पंचायत शहादा, अखिल भारतीय साधूमार्गी जैन संघ शहादा, क्रीड़ाभवन क्लब शहादा के ट्रस्टी हैं।

श्री. बाबूलाल चोरड़िया, ब्यावर (अजमेर)

उद्योगपति श्री. चोरड़िया का ब्यावर एवं भीलवाड़ा में सीमेण्ट व पाईप का व्यापार है।

वे अ. भा. साधू मार्गी जैन संघ बीकानेर, के शाखा संयोजक तथा जैन मित्र-मण्डल ब्यावर के पूर्व-मंत्री एवं वर्तमान कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

वे जैन जवाहर मित्र मण्डल ब्यावर के महामंत्री हैं।

श्री. गुलाबचन्द चोरड़िया, विजयनगर (अजमेर)

श्री. गुलाबचन्द (एम्.ए.एल्एल्.बी.) का जन्म ५ नवम्बर १९१९ में हुआ। वे विजयनगर नगरपालिका के उपाध्यक्ष, पुरानी काँग्रेस के सक्रीय कार्यकर्ता तथा महावीर इण्टरनैशनल के अध्यक्ष हैं। खादी आन्दोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्रीप्राज्ञ जैन स्मारक समिति विजयनगर के मन्त्री तथा वर्तमान में मन्त्री हैं। वे श्रीप्राज्ञ महाविद्यालय के संस्थापक सदस्य हैं। वे श्री श्वेतांबर स्थानक स्वाध्याय संघ गुलाबपुरा, के सदस्य एवं कई संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

श्री. चंचलमल कल्याणमल चोरड़िया, जोधपुर

श्री. चंचलमल विद्युत् अभियंता हैं। वे 'जोधपुर चोरड़िया टाईम' के अध्यक्ष और सिंहसभा के सदस्य हैं। जोधपुर ओसवाल समाज के वे विशिष्ट समाजसेवी तथा प्राकृतिक चिकित्सा एवं ॲक्यूप्रेशर केन्द्र के संचालक है।

कुछ पुस्तकों का विमोचन उन्होंने किया है। अनेक पत्र पत्रिकाओं में उनके लेख छपते रहते हैं। पत्नी श्रीमती रत्नाजी भी प्रमुख समाज-सेविका हैं। धार्मिक शिविरों में उनकी विशेष भूमिका होती है।

श्री भवरलाल चोरड़िया, आसीन्द (भीलवाडा)

श्री. भवरलाल चोरड़िया का जन्म दि. १४ मई १९५३ को हुआ। वे भारतीय जनता पार्टी आसीन्द के नगर अध्यक्ष तथा गत १५ वर्षों से नगर पार्षद हैं।

इसके अतिरिक्त वे अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। वे दिल्ली दूरभाष सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त हुए और आसीन्द किराणा व्यापार असोसिएशन के अध्यक्ष पद पर भी आसीन रहे।

श्री. चाँदमल चोरड़िया, आसिन्द (भीलवाडा)

श्री. चाँदमल चोरड़िया का जन्म ७ जुलाई १९४० में हुआ। वे श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा असिन्द के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में संरक्षक हैं। सामाजिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं।

श्री. भवरलाल चोरड़िया, बीकानेर

श्री. चोरड़िया बीकानेर व्यापार उद्योग मण्डल के दो बार अध्यक्ष एवं बीकानेर नगर परिषद के पूर्व सदस्य भी रहे हैं। वे बीकानेर अनाज समिति के मन्त्री, श्री जैन पाठशाला सभा के कोषाध्यक्ष, श्री ओसवाल जैन महिला उद्योग शाला के अध्यक्ष तथा उत्तर रेल्वे क्षेत्रीय सलाहकार समिति-बड़ौदा हाऊस दिल्ली के सदस्य हैं।

सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में उनका विशेष स्थान है।

श्री. शुभकरण चोरड़िया, गंगाशहर (बीकानेर)

श्री. शुभकरण का जन्म दि. २४ नवम्बर १९४४ में हुआ। वे नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष हैं। जैन पाठशाला सभा, महावीर इन्टरनैशनल बीकानेर, नई लाईन ओसवाल पंचायती पन्यास गंगाशहर, संखलेचा कटला किरायेदार संघ बीकानेर आदि अनेक संस्थाओं से वे संलग्न हैं।

श्री. सूरजमल चोरड़िया, नौखा (बीकानेर)

श्री. सूरजमल गत ३० वर्षों से फूल बागान टोबॅको मर्चण्ट असोसिएशन कलकत्ता के अध्यक्ष तथा श्री जैन आदर्श सेवा संस्थान के वर्तमान अध्यक्ष एवं संस्थापक हैं। सन् १९९५ से वे नोखा खाद्य व्यापार मण्डल के अध्यक्ष तथा राजस्थान खाद्य व्यापार मंडल के कार्यकारिणी सदस्य हैं। वे नागरिक सेवा संस्थान नोखा, महावीर इण्टरनेशनल नोखा के वरिष्ठ सदस्य हैं। श्री. चोरड़िया मानव सेवा धर्मार्थ पन्यास के प्रमुख विश्वस्त हैं। वे जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा नोखा की कार्यकारिणी सदस्य, गंगा गौशाला के आजीवन सदस्य, ओसवाल श्री संघ पंचायत नोखा के पूर्वाध्यक्ष, नोखा युवा संगठन, यूथ क्लब आदि के संरक्षक, जैन आदर्श विद्या निकेतन नौखा के प्रबन्धक तथा जैन आदर्श विद्या निकेतन नौखा के प्रबन्धक व भवन निर्माता हैं।

श्री. कन्हैयालाल चोरड़िया, जाजपुर

श्री. कन्हैयालाल का जन्म दिनांक २१ सितम्बर १९४७ में हुआ। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक-संघ (जाजपुर रोड़), श्री साधुमार्गी जैन संघ (जाजपुर रोड़ शाखा) के संयोजक तथा नगर व्यवस्था प्रमुख हैं। ओसवाल गार्मेण्ट्स् के नाम से उनका व्यवसाय है।

श्री लाभशुभलाल चोरड़िया, उदयपुर (राज.)

श्री.लाभशुभलाल का जन्म दि. ४ जुलाई १९३४ में हुआ। आपने एम्.ए.एल्एल्.बी. की शिक्षा प्राप्त की। सन् १९६७ से वे पैतृक वकालत पेशे में हैं। १९४७ में बाल काँग्रेस एवं तत्पश्चात् इन्दिरा काँग्रेस के सक्रीय कार्यकर्ता रहे। नवलकिशोरजी की निकटता में श्रीमती इन्दिरा गांधी की जेल यात्रा के समर्थन स्वरूप १९७८ में जेल यात्रा की। वे नारायण सेवा संस्थान में आजीवन सदस्य हैं। १९९२ में वे पूर्णरूप से समाजसेवा में जुट गये, जिसमें नि:शुल्क न्यायिक कार्य, नानेश चिकित्सालय की चिकित्सा सेवा में चुम्बक व एक्यूप्रेशर पद्धति से नि:शुल्क सेवा समाविष्ट है।

श्री. माँगीलाल चुनीलाल चोरड़िया, कोटा

वे श्री जैन ट्रस्ट जैसलमेर के विश्वस्त तथा श्री जैन श्वेतांबर पेढ़ी कोटा, के कोषाध्यक्ष हैं।

श्री. राजमल नानामल चोरड़िया, रतलाम

९० वर्षीय श्री. चोरड़िया मध्यप्रदेश के रतलाम नगर के प्रसिद्ध समाजसेवी और स्वर्णाभूषण निर्माता एवं विक्रेता हैं।

उन्होंने ६० वर्ष पूर्व रतलाम में स्वर्णाभूषण के निर्माण एवं विक्रय का व्यवसाय आरम्भ किया, तब से आज तक आपकी ९२% शुध्द स्वर्ण की प्रामाणिकता समस्त देश में प्रसिद्ध है। पुनः क्रय करते समय ग्राहक को ९२% स्वर्ण की राशि लौटाई जाती है।

गत ४० वर्षों से आप समाज-सेवाओं से सम्बद्ध हैं। गोपाल गौ-शाला, जैन पाठशाला, पशुशाला एवं आयम्बिल खाता जैसी अनेक संस्थाओं के संस्थापक विश्वस्त हैं। इस आयु में भी प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में वे तत्पर रहते हैं।

श्री. शान्तिलाल राजमल चोरड़िया, इन्दौर

श्री. शान्तिलाल रतलाम, इन्दौर (मध्यप्रदेश) के निवासी हैं। समाज और धार्मिक कार्यों में आपको विशेष रुचि पैतृक उत्तराधिकार में मिली। सेठ श्री. राजमलजी चोरड़िया की सेवाओं को आप क्रियान्वित करने में सदैव अग्रणी रहते हैं। मालव केशरी पूज्य सौभाग्यमलजी म.सा. की शताब्दी समारोह के पावन पर्व के उपलक्ष्य में राष्ट्र संत, जैनाचार्य श्री जयन्त सैन सूरी जी म.सा.की नेश्रा में दि. ४ जून २००० को समस्त रतलाम ज़िले के जैन बन्धुओं को स्वामी वात्सल्य (भोज) का आयोजन किया।

श्री. लालचन्द मन्नालाल चोरड़िया, भानपुरा

श्री. लालचन्द चोरड़िया का जन्म ३१ दिसम्बर १९२० को हुआ। उन्होंने बी.ए., एल् एल्. बी. की उपाधि अर्जित की। पैतृक कृषि के साथ वे वकालत भी करते रहे। वे पिताश्री मन्नालालजी द्वारा निर्मित ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। जिसके माध्यम से गत ३८ वर्षों से अभाव ग्रस्त, पीड़ितों और मेघावी छात्रों का सहयोग प्रदान कर समाज के उत्थान में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। भारतीय स्वयं सेवक संघ के ४५ वर्षों तक अध्यक्ष, मन्त्री आदि पदों को सुशोभित किया।

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लिया, इस हेतु १० माह तक कारावास में रहे। इन्दौर रियासत की भारी यातनाएँ सही। जब तिरंगा झण्डा फहराया तो पुलिस झण्डा लेने दौड़ी, पर चील झण्डा लेकर उड़ गई और पुलिस को खाली हाथ लौटना पड़ा। तीन बार घर की छान-बीन की गई। बहुत-सा साहित्य तो पुलिस ले गई।

श्री.लालचन्द 'प्रजामण्डल पत्रिका' इन्दौर के प्रबन्ध सहायक रहे, ५ वर्षों तक सम्पादन किया। स्वतन्त्रता के बाद भी अनेक दैनिक पत्रों से जुड़े रहे।

कई वर्षों से वे भानपुरा ट्रस्ट कल्याण के संरक्षक हैं। सन् १९७२ में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लाल किला दिल्ली में ताम्र-पत्र से उन्हें सम्मानित किया, जिसकी अभी तक केन्द्र व प्रान्त से सम्मान स्वरूप सम्मान निधि उन्हें प्राप्त हो रही है।

श्री. विमलकुमार चोरड़िया-भानपुरा (म.प्र.)

श्री. विमलकुमार चोरड़िया का जन्म भानपुरा में १५ अक्तूबर १९२४ को हुआ। उन्होंने बी.कॉम, एल् एल्.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। समाजसेवा, राष्ट्रसेवा, दलितसेवा आदि की पैतृक भावना उन्हें उत्तराधिकार में मिली।

स्व.श्री.मन्नालाल चोरड़िया ने पारिवारिक धर्मार्थ ट्रस्ट का गठन किया, जिसके माध्यम से अभावग्रस्त, पीड़ित और मेघावी छात्रों को गत ३० वर्षों से निरन्तर सहायता दी जा रही है।

श्री. विमलकुमार भानपुरा के चोरड़िया गोत्र के सिरमोड़ हैं। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने सक्रीय योगदान दिया।

१९५६ से १९६२ तक वे मध्य प्रदेश विधान सभा के सदस्य, १९६२ से १९६८ तक (सांसद) राज्यसभा के सदस्य,

विक्रम विश्वविद्यालय के सिनेट के सदस्य तथा अन्य अनेक संस्थाओं और समितियों से सक्रीय रूप से सम्बद्ध रहे। १९७० से १९८० तक वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला संचालक और १९८० से १९९० तक मध्यभारत के प्रान्त संचालक रहे।

उन्होंने कई पुस्तकें, स्तवन, सज्जायें, लेख आदि लिखे। मानवसेवा, जीवदया ट्रस्ट प्रकाशन दिल्ली, द्वारा विशिष्ट लेखक के रूप में उन्हें सम्मानित किया गया। उन्हें जैन रत्न की उपाधि से भी विभूषित किया गया।

धार्मिकक्षेत्र में भी वे अग्रणी रहे। अनेक तीर्थ यात्राएँ की, पैदल संघ निकाले, उपध्यान तप किया। अनेक जैन बिम्बों की प्रतिष्ठाएँ कराई।

वर्तमान में वे भारतीय जनता पार्टी, मन्दसौर जिल्हा के उपाध्यक्ष हैं।

डॉ. कमलकुमार चोरड़िया, भानपुरा

डॉ. कमलकुमार चोरड़िया का जन्म १० मार्च १९५४ को हुआ। उन्होंने एम्.बी.बी.एस्., एम्.डी. की शिक्षा अर्जित की। चिकित्सा के कार्य में अत्यधिक व्यस्त होने पर भी पैतृक समाज व जनकल्याण के कार्यों में अधिक रुचि रखते हैं। वे 'जैन सोशल ग्रुप' नीमच, के अध्यक्ष, लायन्स् क्लब के पूर्वाध्यक्ष तथा महावीर इन्टरनैशनल नीमच के उपाध्यक्ष हैं।

उन्होंने नीमच में 'इण्डियन मेडिकल असोशिएशन' की शाखा स्थापित की।

वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (ज़िला) नीमच के ज़िला सम्पर्क प्रमुख हैं। उनसे समाज को बहुत आशाएँ हैं।

श्री. प्रकाशमल चोरड़िया, चैन्नई

श्री.प्रकाशमल चोरड़िया का जन्म दि. ३ अगस्त १९३९ में हुआ। बी.कॉम. के पश्चात् उन्होंने सी.ए. की शिक्षा पाई।

चार्टर्ड अकाऊन्टन्ट होते हुए भी उन्हें लेखन में सुरुचि है। साथ ही वे चैन्नई की सामाजिक एवं धार्मिक अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

उन्होंने युवा प्रश्न मंच भाग एक से १८, ''मृत्यु चिन्तन एवं क्षमा'' पुस्तकों का विमोचन किया। वे श्री महावीर अहिंसा प्रचार संघ चैन्नई, जैन अकॅडमी फॉर वूमन और एस्.एस्.जैन युवक संघ चॅरिटेबल ट्रस्ट चैन्नई, के अध्यक्ष हैं।

अखिल भारतीय जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ चैन्नई के उपाध्यक्ष, इण्डियन व्हेजिटेरियन कॉंग्रेस तथा करुणा इण्टरनैशनल के कोषाध्यक्ष, विजन ट्रस्ट चैन्नई, कल्याणमल प्रकाशमल चोरड़िया ट्रस्ट, अमृत कँवर कल्याणमल चोरड़िया ट्रस्ट तथा शान्ताबाई चॅरिटीज ट्रस्ट के वे विश्वस्त हैं।

श्री.शरबतचन्द चोरड़िया, चैन्नई

श्री.चोरड़िया अपने पिताश्री के जनकल्याण कार्यों के संचालन में सहयोग दे रहे हैं। उन्होंने २० मार्च १९३७ को पिताश्री की स्मृति में श्री हरिश्चन्द्र चोरड़िया नेत्र-चिकित्सालय का निर्माण किया, जिसका उद्घाटन तामिलनाडू के तत्कालीन राज्यपाल श्री. मोहनलाल सुखाड़िया ने किया। इस चिकित्सालय का नियंत्रण 'सिरेमल हीराचन्द ट्रस्ट' द्वारा हो रहा है। यह वातानुकूलित शल्य-चिकित्सागृह नवीनतम विदेशी उपकरणों से युक्त है तथा लाभरहित, न्यूनतम शुल्क द्वारा जन-कल्याण हेतु नियंत्रित है। यहाँ निर्धनों की निःशुल्क सेवा की जाती है।

श्री.कनकमल कल्याणमल चोरड़िया, चैन्नई

श्री.कनकमल अ. भा. श्री जैन रत्न हितैशी श्रावक संघ के पॅटर्न एवं जैन श्वेताम्बर श्रावक संघ चैन्नई के पूर्वाध्यक्ष हैं।

श्री. दशरथमल कनकमल चोरड़िया, बैंगलोर

श्री. दशरथमल चोरड़िया का जन्म २० फरवरी १९४१ को जोधपुर में हुआ। गत ३३ वर्षों से वे बँगलोर में व्यापार कर रहे हैं। बी.कॉम, बी.एल्. की शिक्षा अर्जित कर वे बैंगलोर में बस गये।

पिताश्री कनकमल साहुकार सेठ कई वर्षों से मद्रास जैन संघ के अध्यक्ष तथा अनेक संस्थाओं से संलग्न रहे। उन पर भी पैतृक प्रभाव रहा। राजस्थान यूथ असोसिएशन, बँगलोर के वे अध्यक्ष रहे।

लायन्स् क्लब के कई पदों पर रहकर उन्होंने सेवाएँ दी। वर्तमान में वे कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के उपाध्यक्ष तथा अखिल भारतीय जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कर्नाटक शाखा के उपाध्यक्ष हैं। बँगलोर की अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं जन-कल्याणकारी संस्थाओं से वे सम्बद्ध हैं। उनके दादाजी १२० वर्ष पूर्व तमिलनाड़ में आकर बसे।

श्री. सुरेशकुमार नेमीचन्द चोरड़िया, सिकन्दराबाद

श्री.सुरेशकुमार का जन्म ५ जनवरी १९५७ को हुआ। उन्होंने जैन यूथ क्लब, हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश बॉल बेयरिंग असोसिएशन एवं ट्विन् सिटी जेसीज़ के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। वर्तमान में मुख्यमन्त्री द्वारा स्थापित भगवान् महावीर २६०० वीं जन्म जयन्ति समिति के प्रान्त स्तरीय समिति के सदस्य हैं।

श्री. भवरलाल चौधरी (चोरड़िया)

श्री.चौधरी पीपाड़ शहर के निवासी हैं। उन्होंने ज्येष्ठ पिता श्री.जालमचन्द चौधरी आचार्य श्री.हस्तिमल जी महाराज की नेश्रा में दीक्षा ली। जयन्त मुनि या बाबाजी महाराज के नाम से प्रख्यात थे। श्री.भवरलाल अपने पिता के समान पीपाड और चैन्नई के समाज सेवी हैं। पीपाड में अस्पताल, पाठशाला एवं महाविद्यालय आदि का निर्माण कराने में तन, मन, धन का योगदान दिया।

श्री. कान्तिलाल चौधरी (चोरड़िया), धुलिया

श्री. कान्तिलाल चौधरी का जन्म १८ अप्रैल १९४५ में हुआ। वे हिन्दी शिक्षा संस्था पारोला-रोड, धुलिया के अध्यक्ष हैं। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक-संघ धुलिया, साध्वी प्रीतिसुधाजी इंग्लिश मिडल स्कूल धुलिया, श्री. ओसवाल पंचायत धुलिया के उपाध्यक्ष, राजवाडे मंडल पीपल्स् को. ऑप. बैंक लि. धुलिया, के संचालक, श्री. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर के मंत्री एवं अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

श्री. भवरलाल जैन (चोरड़िया), जलगाँव

श्री. भवरलाल जैन (चोरड़िया) का जन्म १२ दिसम्बर १९३७ को श्री. हिरालाल सागरमल जैन के यहाँ वाकोद, ज़िला जलगाँव में हुआ ।वाणिज्य एवं विधि शाखाओं में उपाधियाँ पाने के पश्चात् श्री. भवरलाल ने महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं वे राजपत्रित अधिकारी नियुक्त हुए, किन्तु शासकीय पद एवं प्रतिष्ठा उन्हें आकर्षित न कर सके। शायद यह विधिलिखित था कि किसान परिवार के इस भूमिपुत्र का जीवन कृषि तथा किसानों की सेवा में ही समर्पित हो। १९६२ से कृषि से सम्बद्ध बीज, खाद, कीटनाशक, ट्रॅक्टर, खेती के उपकरण आदि के व्यापार का अध्याय प्रारम्भ हुआ। उनकी यह तपस्या १५ वर्षों तक चलती रही।

१९७८ से वे कृषि-आधारित औद्योगिक क्षेत्र से जुड़े। पपीते के दूध से पपेन बना कर विकसित देशों को निर्यात करना, यह था उनका पहला अभियान। जिसे पूरा करने के लिए गाँव-गाँव घूमकर उन्होंने किसानों को पपीता लगाने के लिए प्रेरित किया। किसानों की उपज उनसे उचित भाव से खरीदने का दायित्व लिया और आवश्यक तकनीकी सेवाएँ भी दी। श्री.जैन ने इस प्रकल्प को भी किसानों से जुड़ने का एक सुअवसर माना। आज तक 'जैन रिफाईन्ड पपेन' दुनिया में प्रथम स्थान पर है। श्री. भवरलाल जैसे दृढ़ निश्चयी और निश्छल व्यक्ति में भारतीयता कूट-कूट कर भरी हुई है, उनके इस स्वप्न ने जलगाँव जैसे कसबे को पहली बार विश्व के मानचित्र पर स्थापित किया।

इसके पश्चात् श्री.जैन ने पीवीसी पाईपों का उत्पादन आरम्भ किया। खेती में पानी देने की पारम्परिक प्रथाएँ, जो अकार्यक्षम, जटिल और महँगी थी। जैन पीवीसी पाईपों के प्रयोग से किसान को लाभ मिला और उसके जीवन में नई किरण जागृत हुई। पीवीसी केसिंग तथा स्क्रीन पाईपों का भारत से निर्यात 'जैन पाईप' द्वारा ही आरम्भ हुआ। किन्तु सही माने में किसानों को वरदान मिला 'जैन टपकसिंचन' प्रणाली से। भारतवर्ष में पहली बार खेती की उपज बढ़ाने, खेती का खर्च कम करने और उत्पादन की गुणवत्ता सुधारने के लिए नए तकनीक का प्रचार एवं प्रसार करने में उनका पथदर्शक योगदान ऐतिहासिक बन चुका है। किसान को स्वावलम्बी तथा समृद्ध बनाने के लिए 'जैन टपक सिंचन' पद्धति देश के हर कोने में 'कामधेनु' की तरह कार्यान्वित है। इस तकनीक को किसानों और अफसरों तक पहुँचाने में उनके जीवन का एक संघर्षमय तप काम आया। फलस्वरूप जन्म हुआ एक ऐसी उद्योग संस्था का, जिसका नामोनिशान भी इससे पहले भारत में नहीं था।

इस तकनीक का जीता जागता उदाहरण कृषक जगत् के सम्मुख रखने हेतु श्री. जैन ने १००० एकड़ का कृषि-संधान, विकास और प्रात्याक्षिक केन्द्र निर्माण किया। यहाँ पर बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने और मिट्टी एवं जल-परीक्षण हेतु सभी तकनीकों को प्रदर्शित किया है। संगणक- नियन्त्रित हरित-गृह (ग्रीन हाऊस) इत्यादि भी यहाँ विद्यमान हैं। खेती, वनखेती तथा फलबाग सभी का अपूर्व मिश्रण यहाँ देखा जा सकता है। लगभग १.५ लाख हरे-भरे पेड़ इन तकनीकों के प्रतीकस्वरूप फल-फूल रहे हैं। किसानों के लिए यह 'तीर्थस्थान' बन गया है। ऊतक संवर्धित केले के पौधों का निर्माण उनका नवीनतम साहसिक अभियान है। इन पौधों से उपज कम समय में आती है, उत्पादन में वृद्धि होती है और व्यय में कमी। ऐसे लाखों पौधे आज ठाठ से किसानों के खेतों में डोल रहे हैं।

२१वीं शताब्दी में पदार्पण करने वाले किसान को विश्वास एवं साहस सहित आगे बढ़ने और उसके हाथ शक्तिशाली बनाने के लिए इन तकनीकों द्वारा एक शक्तिशाली अस्त्र किसानों को उपलब्ध हुआ है। हाल ही में श्री. जैन ने फलों और सब्जियों पर प्रक्रिया करने के उद्देश्य से दो विशाल कारखानों का निर्माण किया। इन विश्वस्तरीय कारखानों का उत्पादन मात्र निर्यात हेतु ही है। इस माध्यम से वे किसानों की उपज का भी क्रय कर और उसकी मूल्यवृद्धि करके निर्यात भी कर रहे हैं। किसान को आधुनिकखेती करने के लिए सभी तकनीक और निवेश का निर्माण वे करते आए हैं। कृषि-क्षेत्र में एकीकरण और सुसूत्रता लाकर श्री.भवरलाल द्वितीय हरित क्रान्ति के प्रणेता बने। इन सभी अपूर्व वस्तुओं का निर्माण करते हुए उनको समाज के प्रति दायित्व तथा इस कटिबद्धता का कभी विस्मरण नहीं हुआ। शहर में पाठशाला, महाविद्यालय, ग्रन्थालय का निर्माण, अध्ययन गोष्ठी आदि के लिए प्रायोजकता इत्यादि नियमित दैनिक कार्य हैं।

औषधालय, आरोग्य एवं क्रीडा-शिविर, आयुर्वेद, होमियोपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा और योगसाधना को वे बहुत ही ऊँचा स्थान देते हैं और योगदान भी। स्थानक, मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर तथा सम्प्रदाय केन्द्र इत्यादि के निर्माण में भी श्री. जैन अग्रसर हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में सामूहिक विवाह, कवि-सम्मेलन, संगीत-नृत्य स्पर्धा, नाटक आदि के आयोजन आए दिन होते ही रहते हैं। मनुष्य की ऊँचाई को यदि कार्यों से नापना है, तो श्री. भवरलाल की ऊँचाई पर्वत समान है। कृषिक्षेत्र में उनका कार्य अविस्मरणीय तथा चिरस्थायी है। उन्होंने एक ऐसी संस्था का निर्माण किया है, जो चलती रहेगी सैंकड़ों वर्षों तक, उनके पश्चात् भी। उनके अपने जीवन का यही ध्येय है, ''जब आए थे तब दुनिया जैसी थी, उससे अच्छी करके ही जाना है।'' इन असामान्य कार्यों के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से गौरवान्वित भी किया गया है।

'उद्योग पत्र','उद्योग विभूषण','उचित व्यवहार','एफ्आयई फाऊन्डेशन' पुरस्कार, 'आयआयई मानद सदस्यता' आदि उदाहरण हैं। विशेष उल्लेखनीय है 'सिंचन संघ', अमरीका का 'क्रॉफर्ड रीड मेमोरियल' पुरस्कार, जो विगत १८ वर्षों में विश्व के मात्र १२ व्यक्तियों को और एशिया में पहली बार श्री.भवरलाल को दिया गया।

प्रस्तुत निर्देशिका का विमोचन करके सभी चोरड़िया व सह-गोत्रीय भाइयों को निःशुल्क पहुँचाने का संकल्प करना, तथा सभी का सुदृढ़ संगठन करना, उनका समाज के प्रति समाज सेवा की दृढ़ इच्छाशक्ति दर्शाता है। इसी कड़ी में यह निर्देशिका प्रकाशित कर आपको भेजी जा रही है।

श्री. दलिचन्द जैन (चोरड़िया), जलगाँव

श्री. दलिचन्द जैन (चोरड़िया) का जन्म ७० वर्ष पूर्व श्री. हस्तीमल के यहाँ वाकोद ग्राम में हुआ। जलगाँव में महाविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त कर वे यान्त्रिकी अभियन्ता (मेकॅनिकल इंजीनियर) हुए। कुछ समय तक मुम्बई महानगरी में यान्त्रिकी सेवाएँ प्रदान कर वे जलगाँव लौट आए और श्री. भवरलाल जैन के साथ पारिवारिक व्यवसाय में सम्मिलित हुए।

कृषि में उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएँ, जैसे बीज, खाद, पेट्रोलियम पदार्थ, ट्रॅक्टर्स आदि के व्यापार में कुशलता प्राप्त की। पीवीसी पाईप के उत्पादन एवं वितरण का पूरे देशभर में कार्य किया। उनके कुशल व्यापार से देश के कृषि-विकास में बहुत वृद्धि हुई। उद्योग के साथ-साथ वे समाज सेवा, धार्मिक कार्यों में भी रुचि लेते रहे। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में उन्हें इतना आनन्द मिला कि वे जलगाँव के विशिष्ट समाजसेवी बन गए।

वे श्री महावीर सहकारी बँक लिमिटेड जलगाँव; श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जलगाँव, श्री कानजी शिवजी जैन, ओसवाल बोर्डिंग जलगाँव, श्री दलुभाऊ जैन चॅरिटेबल ट्रस्ट, जलगाँव, भारतीय संस्कृति संवर्धन केन्द्र पारोला, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, महावीर जैन सेवा संघ आदि के अध्यक्ष हैं।

खान्देश ओसवाल शिक्षण संस्था, जामनेर, श्री महावीर स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव, श्री महावीर जैन हॉस्पिटल, जलगाँव के कार्याध्यक्ष हैं। भारतीय जैन संघटना से भी वे जुड़े हुए हैं। चांदवड़ के श्री नेमिनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम, सरस्वती विद्या केन्द्र नासिक, जलगाँव, दिल्ली, अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली, ओसवाल मित्र मंडल, मुम्बई के विश्वस्त हैं।

महावीर जैन कुशल सेवा समिति के संचालन के अतिरिक्त आप और अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

श्री. माँगीलाल जैन (गोलेच्छा), अमलनेर

श्री. माँगीलाल का जन्म दिनांक १७ जुलाई १९७० में हुआ। अमलनेर (ज़िला-जलगाँव) निवासी श्री. माँगीलाल तिलोकचन्द जैन गौशाला के विश्वस्त, श्री इच्छापूर्ती दुर्गामाता मन्दिर अमलनेर,(अध्यक्ष) एवं अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

श्री. विमलेश तोलावत-नागौर

श्री. विमलेश पर्यावरण प्रकोष्ठ युनेस्को फेडरेशन, वन्य जीव सुरक्षा समिति नागौर, भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा, (नागौर शहर) के अध्यक्ष एवं श्री पार्श्वनाथ जैन युवा मंच के संयोजक हैं।

श्री. नरेन्द्रकुमार तोलावत, गौहाटी (आसाम)

गौहाटी (आसाम) के श्री. नरेन्द्रकुमार तोलावत का जन्म दि. १६ जनवरी १९५९ को हुआ। वे गौहाटी के जैन युवा मंच के मन्त्री तथा श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी संघ और वनवासी कल्याण आश्रम के सहमन्त्री हैं।

श्री. हरकचंद केशरचंद पारख, पुणें

सालसबरी पार्क, पुणे के श्री. हरकचंद बेसन मिल्स्, फ्लोरमिल, जेमिनी मार्का आईल मिल और कुंकुम फैक्टरी के संचालक हैं। समाज सेवा तथा मानव सेवा इनके जीवन के अंग हैं। सन् १९९४ से आनन्द प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हैं। उनके कार्यकाल में इस प्रतिष्ठान की स्थायी निधि ४५ लाख से बढ़कर ९ करोड़ २ लाख रुपये हो गई है। जिसके ब्याज से ९.२५ लाख रुपयों की राशि का समाज के दुर्बल वर्ग में प्रति माह वितरण किया जाता है। ५० छात्रों को प्रतिमाह छात्रवृत्ति दी जाती है,समय-समय में शिविरों का आयोजन कर सिलाई यंत्रों का भी वितरण किया जाता है एवं औषधीय सहायता दी जाती है।

श्री. बाबूलाल छोटमल पारख, अमलनेर

श्री.बाबूलाल अमलनेर के भूतपूर्व-नगराध्यक्ष तथा अमलनेर के विशिष्टतम व्यक्ति हैं। स्थानकवासी श्रावक संघ अमलनेर, ओसवाल जैन संघ के अध्यक्ष तथा व्यापार संघटना के वे उपाध्यक्ष हैं।

श्री.प्रकाशचन्द पारख, शहादा

श्री. प्रकाशचन्द पारख श्री महावीर नागरी सहकार पतपेढ़ी के अध्यक्ष, स्थानकवासी जैन संघ, नागरी सोसायटी, जैन राजस्थानी ओसवाल संघ के संचालक तथा जैन युवा दल शहादा के सभापति हैं।

श्री.अजीतकुमार पन्नालाल पारख, अमलनेर

श्री.अजीतकुमार वर्तमान में कॉंग्रेस के अध्यक्ष हैं। वे नगरसेवक भी रहे। उनके पिता अमलनेर के नगर-अध्यक्ष थे।

श्री. घीसूलाल पारख-पाली (मारवाड़)

श्री.घीसूलाल पारख का जन्म २९ फरवरी १९३२ में हुआ। वे पाली सेवा मंडल, आँखों का अस्पताल, सेवा-समिति के प्रमुख कार्यकर्ता तथा श्री राम रसोड़ा ट्रस्ट के विश्वस्त हैं। जिस में प्रतिदिन २२५ लोगों को निःशुल्क भोजन कराया जाता है। सरस्वती शिक्षा समिति के अंतर्गत ज़िले के १० विद्यालयों का संचालन कर रहें हैं। गत ५५ वर्षों से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी संलग्न हैं। वर्तमान में संघचालक हैं। बाढ़, अकाल, भूकंप में उपरोक्त संस्थाओं के माध्यम से वे कार्य करते हैं।

श्री. ज्ञानचन्द पारख (विधायक), पाली (मारवाड़)

श्री. ज्ञानचन्द पारख का जन्म दिनांक १ अक्तूबर १९६० में हुआ। वे २९ नवम्बर १९९४ से २२ नवम्बर १९९९ तक पाली नगर परिषद के सभा परिषद रहे। वे २६ नवम्बर १९९९ को पाली विधानसभा क्षेत्र से विधायक भारतीय जनता पार्टी से निर्वाचित हुए। सामाजिक कार्यों में उन्हें विशेष रुचि है। समाज को उनसे बहुत आशाएँ हैं।

श्री भंवरलाल पारख, श्री डुंगरगढ

श्री.भवरलाल पारख (बी.कॉम.,एलएल.बी.) श्री डुंगरगढ़ के शैक्षणिक संस्थान एव चिकित्सीय संसाधनों में अधिक रुचि लेते हैं। वे श्री डुंगरगढ़ के वरिष्ठ नागरिक हैं।